अध्याय १२

श्री चैतन्य महाप्रभु एवं जगदानन्द पण्डित का प्रेम व्यवहार

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में बारहवें अध्याय का सारांश इस प्रकार दिया है। इस अध्याय में श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा दिन-रात प्रकट किये जाने वाले प्रेमावेश के विकारों की व्याख्या हुई है। बंगाल के भक्तों ने महाप्रभु का दर्शन करने के लिए पुनः जगन्नाथपुरी की यात्रा की। हमेशा की तरह शिवानन्द सेन ही अग्रणी थे, जिन्होंने अपनी पत्नी तथा बच्चों के साथ यात्रा की। चूँकि रास्ते में व्यवस्था करने में देर हो गई थी और नित्यानन्द प्रभु को रहने के लिए उपयुक्त स्थान नहीं मिल सका, इसलिए वे कुछ असन्तुष्ट हो गये। अतएव वे शिवानन्द पर बहुत क्रुद्ध हो गये, क्योंकि टोली के सारे विषयों का भार उन्हीं पर था। अतः प्रेममय क्रोध में उन्होंने शिवानन्द सेन पर पाद-प्रहार किया। शिवानन्द सेन ने इसे नित्यानन्द प्रभु की महती कृपा के रूप में स्वीकार किया, किन्तु उनका भांजा श्रीकान्त सेन कुछ क्षुब्ध हो गया और वह साथ छोड़कर चला गया। वह अपनी टोली के पहुँचने के पूर्व ही जगन्नाथपुरी में श्री चैतन्य महाप्रभु से जा मिला।

उस वर्ष परमेश्वर दास मोदक नामक एक भक्त भी जगन्नाथपुरी में श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने के लिए अपने परिवार सहित गया। भक्तगण प्रायः श्री चैतन्य महाप्रभु को अपने साथ भोजन करने के लिए निमन्त्रित करते रहते। जब महाप्रभु ने सबों को विदा कर दिया, तो उन्होंने उनसे बहुत ही मोहक ढंग से बातें कीं। इसके एक वर्ष पूर्व जगदानन्द पण्डित को प्रसाद तथा वस्त्र

देकर शचीमाता के पास भेजा गया था। इस वर्ष वे महाप्रभु के सिर की मालिश के लिए सुगन्धित चन्दन तेल की बड़ी-सी हँडिया लेकर लौटे। किन्तु महाप्रभु ने वह तेल स्वीकार नहीं किया। फलस्वरूप जगन्नाथ पण्डित ने उन्ही के सामने वह हँडिया तोड़ डाली और अनशन पर बैठ गये। महाप्रभु ने उन्हें शान्त करने हेतु उनसे अपने लिए भोजन पकाने के लिए आग्रह किया। जब महाप्रभु ने उसका पकाया भोजन ग्रहण किया, तो जगदानन्द पण्डित अत्यधिक प्रसन्न हुए और उन्होंने अपना अनशन समाप्त कर दिया।

शृण्वतां शृण्वतां नित्यं गीयतां गीयतां मुदा ।
चिन्त्यतां चिन्त्यतां भक्ताश्चैतन्य-चरितामृतम् ॥ १ ॥

शृण्वतां शृण्वतां नित्यं गीयतां गीयतां मुदा ।
चिन्त्यतां चिन्त्यतां भक्ताश्चैतन्य-चरितामृतम् ॥ १ ॥

शृण्वताम्—सुनते रहना; **शृण्वताम्**—सुनते रहना; **नित्यम्**—नित्य; **गीयताम्**—जप करना; **गीयताम्**—जप करना; **मुदा**—सुखपूर्वक; **चिन्त्यताम्**—ध्यान देना; **चिन्त्यताम्**—ध्यान देना; **भक्ताः**—भक्त; **चैतन्य-चरितामृतम्**—श्री चैतन्य महाप्रभु का जीवन और विशिष्ट गुण।

अनुवाद

हे भक्तों, श्री चैतन्य महाप्रभु का दिव्य जीवन तथा उनके गुण अत्यन्त सुखपूर्वक नित्य ही सुने, गाये तथा ध्यान किये जाँय।

जय जय श्री-चैतन्य जय दयामय ।
जय जय नित्यानन्द कृपा-सिन्धु जय ॥ २ ॥

जय जय श्री-चैतन्य जय दयामय ।
जय जय नित्यानन्द कृपा-सिन्धु जय ॥ २ ॥

जय जय—जय जय; **श्री-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **जय**—जय हो; **दया-मय**—दयामय; **जय जय**—जय जय; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु की; **कृपा-सिन्धु**—कृपा के सागर; **जय**—जय हो।

अनुवाद

सर्व दयामय श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! कृपा के सागर नित्यानन्द प्रभु की जय हो!

जयाद्वैत-चन्द्र जय करुणा-सागर ।
जय गौर-भक्त-गण कृपा-पूर्णान्तर ॥३॥

जयाद्वैत-चन्द्र जय करुणा-सागर ।
जय गौर-भक्त-गण कृपा-पूर्णान्तर ॥ ३ ॥

जय—जय हो; **अद्वैत-चन्द्र**—अद्वैत आचार्य की; **जय**—जय हो; **करुणा-सागर**—कृपा के सागर; **जय**—जय हो; **गौर-भक्त-गण**—श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्तों की; **कृपा-पूर्ण-अन्तर**—जिनके हृदय सदैव कृपा से भरे हैं।

अनुवाद

कृपा के सागर अद्वैत आचार्य की जय हो! श्री चैतन्य महाप्रभु के सारे भक्तों की जय हो, जिनके हृदय सदैव कृपा से पूरित रहते हैं!

अतःपर महाप्रभुर विषण्ण-अन्तर ।
कृष्णेर वियोग-दशा स्फुरे निरन्तर ॥४॥

अतःपर महाप्रभुर विषण्ण-अन्तर ।
कृष्णेर वियोग-दशा स्फुरे निरन्तर ॥ ४ ॥

अतःपर—इसके बाद; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **विषण्ण-अन्तर**—खिन्न मन; **कृष्णेर**—कृष्ण के; **वियोग-दशा**—विरह का भाव; **स्फुरे**—प्रकट होना; **निरन्तर**—सदैव।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु का मन सदैव खिन्न रहता था, क्योंकि उनमें निरन्तर कृष्ण-विरह का भाव प्रकट हो रहा था।

'हाहा कृष्ण प्राण-नाथ व्रजेन्द्र-नन्दन! ।
काहाँ याङ काहाँ पाङ, मुरली-वदन!' ॥५॥

'हाहा कृष्ण प्राण-नाथ व्रजेन्द्र-नन्दन! ।
काहाँ याङ काहाँ पाङ मुरली-वदन!' ॥ ५ ॥

हाहा—हे; **कृष्ण**—मेरे प्रभु कृष्ण; **प्राण-नाथ**—मेरे प्राणेश्वर; **व्रजेन्द्र-नन्दन**—महाराज नन्द के पुत्र; **काहाँ याङ**—मैं कहाँ जाऊँ; **काहाँ पाङ**—मैं कहाँ पाऊँ; **मुरली**—मुरली; **वदन**—मुख।

अनुवाद

महाप्रभु क्रन्दन करते रहते, "हे मेरे प्रभु कृष्ण, हे मेरे प्राणेश्वर! हे महाराज नन्द के पुत्र, मैं कहाँ जाऊँ? मैं आपको कहाँ पाऊँ? हे अपने मुख पर मुरली रखकर बजाने वाले भगवान्!"

रात्रि-दिन एई दशा स्वस्ति नाहि मने ।
कष्टे रात्रि गोङाय स्वरूप-रामानन्द-सने ॥ ६ ॥

रात्रि-दिन एइ दशा स्वस्ति नाहि मने ।
कष्टे रात्रि गोङाय स्वरूप-रामानन्द-सने ॥ ६ ॥

रात्रि-दिन—दिन रात; **एइ दशा**—ऐसी दशा; **स्वस्ति नाहि मने**—मन को शान्ति नहीं; **कष्टे**—बहुत कठिनाई से; **रात्रि गोङाय**—रात बिताई; **स्वरूप-रामानन्द-सने**—स्वरूप दामोदर तथा रामानन्द राय के साथ।

अनुवाद

दिन-रात उनकी ऐसी ही दशा थी। मन की शान्ति न पाने के कारण वे स्वरूप दामोदर तथा रामानन्द राय के साथ बहुत कठिनाई से रात बिताते थे।

एथा गौड़-देशे प्रभुर यत भक्त-गण ।
प्रभु देखिवारे सबे करिला गमन ॥ ७ ॥

एथा गौड़-देशे प्रभुर यत भक्त-गण ।
प्रभु देखिबारे सबे करिला गमन ॥ ७ ॥

एथा—दूसरी ओर; **गौड़-देशे**—बंगाल में; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **यत**—सभी; **भक्त-गण**—भक्त गण; **प्रभु देखिबारे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को देखने; **सबे**—सभी; **करिला गमन**—गये।

अनुवाद

तभी सारे भक्त अपने घरों से श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने बंगाल से यात्रा पर निकले।

शिवानन्द-सेन आर आचार्य-गोसाञि ।
नवद्वीपे सब भक्त हैला एक ठाञि ॥८॥

शिवानन्द-सेन आर आचार्य्र-गोसाञि ।
नवद्वीपे सब भक्त हैला एक ठाञि ॥८॥

शिवानन्द-सेन—शिवानन्द सेन; **आर**—और; **आचार्य्र-गोसाञि**—अद्वैत आचार्य; **नवद्वीपे**—नवद्वीप में; **सब भक्त**—सभी भक्त; **हैला**—हुए; **एक ठाञि**—एकत्र।

अनुवाद

शिवानन्द सेन, अद्वैत आचार्य इत्यादि सारे भक्त नवद्वीप में एकत्र हुए।

कुलीन-ग्राम-वासी आर यत खण्ड-वासी ।
एकत्र मिलिला सब नवद्वीपे आसि' ॥९॥

कुलीन-ग्राम-वासी आर यत खण्ड-वासी ।
एकत्र मिलिला सब नवद्वीपे आसि' ॥९॥

कुलीन-ग्राम-वासी—कुलीनग्राम के निवासी; **आर**—एवं; **यत**—सभी; **खण्ड-वासी**—खण्ड के निवासी; **एकत्र**—एक जगह पर; **मिलिला**—मिले; **सब**—वे सब; **नवद्वीपे आसि'**—नवद्वीप आये।

अनुवाद

कुलीनग्राम तथा खण्ड गाँव के निवासी भी नवद्वीप में एकत्र हुए।

नित्यानन्द-प्रभुरे यद्यपि आज्ञा नाइ ।
तथापि देखिते चलेन चैतन्य-गोसाञि ॥१०॥

नित्यानन्द-प्रभुरे यद्यपि आज्ञा नाइ ।
तथापि देखिते चलेन चैतन्य-गोसाञि ॥१०॥

नित्यानन्द-प्रभुरे—नित्यानन्द प्रभु को; **यद्यपि**—यद्यपि; **आज्ञा नाइ**—आदेश नहीं था; **तथापि**—फिर भी; **देखिते**—मिलने के लिए; **चलेन**—चले गये; **चैतन्य-गोसाञि**—भगवान् चैतन्य।

अनुवाद

चूँकि नित्यानन्द प्रभु बंगाल में प्रचार कर रहे थे, इसलिए श्री चैतन्य

महाप्रभु ने उन्हें आदेश दे रखा था कि वे जगन्नाथपुरी न आयें, किन्तु उस वर्ष वे महाप्रभु के दर्शन हेतु टोली के साथ चले गये।

শ্রীবাসাদি চারি ভাই, সঙ্গেতে মালিনী ।
আচার্যরত্নের সঙ্গে তাঁহার গৃহিণী ॥১১॥

श्रीवासादि चारि भाइ, सङ्गेते मालिनी ।
आचार्य्यरत्नेर सङ्गे ताँहार गृहिणी ॥ ११ ॥

श्रीवास-आदि—श्रीवास ठाकुर आदि; **चारि भाइ**—चार भाई; **सङ्गेते मालिनी**—अपनी पत्नी मालिनी के साथ; **आचार्य्यरत्नेर सङ्गे**—तथा आचार्यरत्न के साथ; **ताँहार गृहिणी**—उनकी पत्नी।

अनुवाद

श्रीवास ठाकुर भी अपने तीन भाइयों तथा अपनी पत्नी मालिनी के साथ थे। इसी प्रकार आचार्यरत्न भी अपनी पत्नी के साथ थे।

শিবানন্দ-পত্নী চলে তিন-পুত্র লঞা ।
রাঘব-পণ্ডিত চলে ঝালি সাজাঞা ॥১২॥

शिवानन्द-पत्नी चले तिन-पुत्र लञा ।
राघव-पण्डित चले झालि साजाञा ॥ १२ ॥

शिवानन्द-पत्नी—शिवानन्द सेन की पत्नी; **चले**—चलीं; **तिन-पुत्र लञा**—तीन पुत्रों सहित; **राघव-पण्डित चले**—राघव पण्डित चले; **झालि साजाञा**—थैले लेकर।

अनुवाद

शिवानन्द सेन की पत्नी भी अपने तीन पुत्रों सहित आईं। राघव पण्डित भी अपने सुप्रसिद्ध भोजन के थैले लेकर उनके साथ हो लिये।

দত্ত, গুপ্ত, বিদ্যানিধি, আর যত জন ।
দুই-তিন শত ভক্ত করিলা গমন ॥১৩॥

दत्त, गुप्त, विद्यानिधि, आर य़त जन ।
दुइ-तिन शत भक्त करिला गमन ॥ १३ ॥

दत्त—वासुदेव दत्त; **गुप्त**—मुरारि गुप्त; **विद्यानिधि**—विद्यानिधि; **आर**—और; **यत जन**—सभी जन; **दुइ-तिन शत**—दो-तीन सौ; **भक्त**—भक्त; **करिला गमन**—गये।

अनुवाद

वासुदेव दत्त, मुरारि गुप्त, विद्यानिधि तथा अन्य अनेक भक्त श्री चैतन्य महाप्रभु के दर्शनार्थ गये। कुल मिलाकर दो-तीन सौ की संख्या थी।

शचीमाता देखि' सबे তাঁর আজ্ঞা লঞা ।
আনন্দে চলিলা কৃষ্ণ-কীর্তন করিয়া ॥১৪॥

शचीमाता देखि' सबे ताँर आज्ञा लञा ।
आनन्दे चलिला कृष्ण-कीर्तन करिया ॥ १४॥

शची-माता देखि'—शचीमाता को मिलकर; **सबे**—सभी ने; **ताँर आज्ञा लञा**—उनसे अनुमति ली; **आनन्दे**—परम सुखपूर्वक; **चलिला**—रवाना हुए; **कृष्ण-कीर्तन करिया**—भगवन्नाम का संकीर्तन करते हुए।

अनुवाद

सब भक्त सर्वप्रथम शचीमाता से मिले और उनसे अनुमति ली। तब परम सुखपूर्वक वे भगवान् के पवित्र नाम का कीर्तन करते हुए जगन्नाथपुरी के लिए रवाना हुए।

শিবানন্দ-সেন করে ঘাটী-সমাধান ।
সবারে পালন করি' সুখে লঞা যান ॥১৫॥

शिवानन्द-सेन करे घाटी-समाधान ।
सबारे पालन करि' सुखे लञा यान ॥ १५॥

शिवानन्द-सेन—शिवानन्द सेन; **करे**—किया; **घाटी-समाधान**—पथ कर; **सबारे पालन करि'**—सबका पालन-पोषण करना; **सुखे**—सुखपूर्वक; **लञा**—करते हुए; **यान**—गये।

अनुवाद

शिवानन्द सेन ने विभिन्न स्थानों (घाटी) पर पथ-कर चुकता किया।

उन्होंने सारे भक्तों का पालन-पोषण करते हुए परम सुखपूर्वक उन सबों का मार्गदर्शन किया।

तात्पर्य

घाटी शब्द प्रत्येक राज्य में जमींदारों द्वारा किये जाने वाले कर चौकी का सूचक है। सामान्यतया यह कर विभिन्न जमीदारों द्वारा शासित सड़कों के रखरखाव के लिए लिया जाता था। चूँकि भक्तगण बंगाल से जगन्नाथपुरी जा रहे थे, इसलिए उन्हें अनेक पथ-कर स्थलों (घाटी) से होकर गुजरना पड़ता था। शिवानन्द सेन के ऊपर ऐसा कर चुकाने का भार था।

সবার সব কার্য করেন, দেন বাস-স্থান ।
শিবানন্দ জানে উড়িয়া-পথের সন্ধান ॥ ১৬॥

সবার সব কার্য্য করেন, দেন বাস-স্থান ।
শিবানন্দ জানে উড়িয়া-পথের সন্ধান ॥ ১৬॥

सबार—हर एक; **सब**—सभी; **कार्य्य**—व्यवहार; **करेन**—थे; **देन**—देते; **वास-स्थान**—ठहरने का स्थान; **शिवानन्द**—शिवानन्द सेन; **जाने**—जानते थे; **उड़िया-पथेर**—उड़ीसा जानेवाले; **सन्धान**—मार्ग।

अनुवाद

शिवानन्द सेन हर एक की देखभाल करते और हर भक्त को ठहरने का स्थान देते थे। वे उड़ीसा जाने वाले सारे मार्गों को जानते थे।

এক-দিন সব লোক ঘাটিয়ালে রাখিলা ।
সবা ছাড়াঞা শিবানন্দ একলা রহিলা ॥ ১৭॥

এক-দিন সব লোক ঘাটিয়ালে রাখিলা ।
সবা ছাড়াঞা শিবানন্দ একলা রহিলা ॥ ১৭॥

एक-दिन—एक दिन; **सब लोक**—टोली के सभी लोग; **घाटियाले राखिला**—टोल संग्रह करने वाले के द्वारा रोक दिये गये; **सबा**—सभी को; **छाड़ाञा**—निकल जाने दिया गया; **शिवानन्द**—शिवानन्द सेन; **एकला रहिला**—अकेले रह गये।

अनुवाद

एक दिन जब कर संग्रह करनेवाला इस टोली की छानबीन कर रहा

था, तो सारे भक्तों को निकल जाने दिया गया, किन्तु कर अदा करने के लिए शिवानन्द सेन पीछे रह गये।

सबे गिया रहिला ग्राम-भितर वृक्ष-तले ।
शिवानन्द विना वास-स्थान नाहि मिले ॥१८॥

सबे गिया रहिला ग्राम-भितर वृक्ष-तले ।
शिवानन्द विना वास-स्थान नाहि मिले ॥ १८ ॥

सबे—सभी जन; **गिया**—गये; **रहिला**—बचे; **ग्राम-भितर**—गाँव में; **वृक्ष-तले**—पेड़ के नीचे; **शिवानन्द विना**—शिवानन्द सेन के बिना; **वास-स्थान**—निवासस्थान; **नाहि मिले**—किसी को नहीं मिला।

अनुवाद

यह टोली एक गाँव में पहुँची और एक पेड़ के नीचे प्रतीक्षा करने लगी, क्योंकि शिवानन्द सेन के अतिरिक्त अन्य कोई उनके रहने के लिए स्थान की व्यवस्था नहीं कर सकता था।

नित्यानन्द-प्रभु भोखे व्याकुल हञा ।
शिवानन्दे गालि पाड़े वासा ना पाञा ॥१९॥

नित्यानन्द-प्रभु भोखे व्याकुल हञा ।
शिवानन्दे गालि पाड़े वासा ना पाञा ॥ १९ ॥

नित्यानन्द-प्रभु—भगवान् नित्यानन्द प्रभु; **भोखे**—भूखे हुए; **व्याकुल हञा**—व्याकुल हुए; **शिवानन्दे गालि पाड़े**—शिवानन्द को गाली पडी; **वासा ना पाञा**—उपयुक्त निवासस्थान नहीं मिल पाया।

अनुवाद

इस बीच नित्यानन्द प्रभु को काफी भूख लग आई, जिससे वे व्याकुल हो उठे। चूँकि उन्हें अभी तक रहने के लिए उपयुक्त स्थान नहीं मिल पाया था, अतएव वे शिवानन्द सेन को गाली देने लगे।

'तिन पुत्र मरुक शिवार, एखन ना आइल ।
भोखे मरि' गेनु, मोरे वासा ना देओयाइल' ॥२०॥

'तिन पुत्र मरुक शिवार, एखन ना आइल ।
भोखे मरि' गेनु, मोरे वासा ना देओयाइल' ॥ २० ॥

तिन पुत्र—तीन पुत्र; **मरुक**—मर जाने दो; **शिवार**—शिवानन्द सेन के; **एखन**—यहाँ; **ना आइल**—वह नहीं आया; **भोखे मरि' गेनु**—मैं भूख से मर रहा हूँ; **मोरे**—मेरे लिए; **वासा**—रहने की व्यवस्था; **ना देओयाइल**—नहीं की।

अनुवाद

उन्होंने शिकायत की, "शिवानन्द सेन ने मेरे रहने के लिए व्यवस्था नहीं की और मैं इतना भूखा हूँ कि मर सकता हूँ। चूँकि वह नहीं आया है, अतएव मैं उसके तीनों पुत्रों को मरने का शाप देता हूँ।"

शुनि' शिवानन्देर पत्नी कान्दिते लागिला ।
हेन-काले शिवानन्द घाटी हैते आइला ॥ २१ ॥
शुनि' शिवानन्देर पत्नी कान्दिते लागिला ।
हेन-काले शिवानन्द घाटी हैते आइला ॥ २१ ॥

शुनि'—सुनकर; **शिवानन्देर**—शिवानन्द सेन की; **पत्नी**—पत्नी; **कान्दिते लागिला**—रोने लगीं; **हेन-काले**—इसी समय; **शिवानन्द**—शिवानन्द सेन; **घाटी हैते**—घाटी से; **आइला**—आये।

अनुवाद

यह शाप सुनकर शिवानन्द सेन की पत्नी रोने लगीं। तभी शिवानन्द सेन घाटी से लौट आये।

शिवानन्देर पत्नी ताँरे कहेन कान्दिया ।
'पुत्रे शाप दिछेन गोसाञि वासा ना पाञा' ॥ २२ ॥
शिवानन्देर पत्नी ताँरे कहेन कान्दिया ।
'पुत्रे शाप दिछेन गोसाञि वासा ना पाञा' ॥ २२ ॥

शिवानन्देर—शिवानन्द सेन की; **पत्नी**—पत्नी; **ताँरे**—उनको; **कहेन**—कहा; **कान्दिया**—रोते हुए; **पुत्रे**—पुत्रों को; **शाप**—शाप; **दिछेन**—दे दिया; **गोसाञि**—नित्यानन्द प्रभु; **वासा ना पाञा**—उन्हें रहने का स्थान नहीं मिल पाने से।

अनुवाद

उनकी पत्नी ने रोते हुए बतलाया, "नित्यानन्द प्रभु ने हमारे पुत्रों को मरने का शाप दे दिया है, क्योंकि उन्हें रहने का स्थान नहीं मिल पाया।"

তেঁহো কহে,—"বাউলি, কেনে মরিষ্কান্দিয়া? ।
মরুক আমার তিন পুত্র তাঁর বালাই লঞা" ॥২৩॥
तेंहो कहे,—"बाउलि, केने मरिस् कान्दिया? ।
मरुक आमार तिन पुत्र ताँर बालाइ लञा" ॥ २३ ॥

तेंहो कहे—उन्होंने कहा; **बाउलि**—पागल औरत; **केने**—क्यों; **मरिस्**—तुम मर रही हो; **कान्दिया**—रो रही हो; **मरुक**—मरने दो; **आमार**—मेरे; **तिन**—तीन; **पुत्र**—पुत्र; **ताँर**—उनकी; **बालाइ**—असुविधा; **लञा**—लेकर।

अनुवाद

शिवानन्द सेन ने उत्तर दिया, "अरी पगली, तुम व्यर्थ क्यों रो रही हो? नित्यानन्द प्रभु को जो असुविधा हमारे कारण हुई है, उसके लिए हमारे तीनों पुत्रों को मरने दो।"

এত বলি' প্রভু-পাশে গেলা শিবানন্দ ।
উঠি' তাঁরে লাথি মাইলা প্রভু নিত্যানন্দ ॥২৪॥
एत बलि' प्रभु-पाशे गेला शिवानन्द ।
उठि' ताँरे लाथि माइला प्रभु नित्यानन्द ॥ २४ ॥

एत बलि'—यह कहकर; **प्रभु-पाशे**—नित्यानन्द प्रभु के पास; **गेला**—गये; **शिवानन्द**—शिवानन्द सेन; **उठि'**—उठकर; **ताँरे**—उनको; **लाथि माइला**—पाद-प्रहार किया; **प्रभु**—प्रभु; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द।

अनुवाद

यह कहकर शिवानन्द सेन नित्यानन्द प्रभु के पास गये, जिन्होंने उठकर उन पर पाद-प्रहार किया।

আনন্দিত হৈলা শিবাই পাদ-প্রহার পাঞা ।
শীঘ্র বাসা-ঘর কৈলা গৌড়-ঘরে গিয়া ॥২৫॥

आनन्दित हैला शिवाइ पाद-प्रहार पाञा ।
शीघ्र वासा-घर कैला गौड़-घरे गिया ॥ २५ ॥

आनन्दित हैला—अत्यधिक प्रसन्न हुए; **शिवाइ**—शिवानन्द सेन; **पाद-प्रहार पाञा**—पाद-प्रहार से; **शीघ्र**—जल्द ही; **वासा-घर**—आवास की; **कैला**—व्यवस्था; **गौड़-घरे**—ग्वाले के घर में; **गिया**—गये।

अनुवाद

पाद-प्रहार से अत्यधिक प्रसन्न होकर शिवानन्द सेन ने तुरन्त एक ग्वाले के घर में नित्यानन्द प्रभु के आवास की व्यवस्था कर दी।

चरणे धरिया प्रभुरे वासाय लञा गेला ।
वासा दिया हृष्ट हञा कहिते लागिला ॥ २६ ॥

चरणे धरिया प्रभुरे वासाय लञा गेला ।
वासा दिया हृष्ट हञा कहिते लागिला ॥ २६ ॥

चरणे—चरणकमल; **धरिया**—पकड़कर; **प्रभुरे**—नित्यानन्द प्रभु के; **वासाय**—उनके निवासस्थान; **लञा**—लेकर; **गेला**—गये; **वासा दिया**—कमरा देने के बाद; **हृष्ट हञा**—अत्यन्त प्रसन्न होकर; **कहिते लागिला**—कहने लगे।

अनुवाद

शिवानन्द सेन ने नित्यानन्द प्रभु के चरणकमल पकड़े और वह उन्हें उनके निवासस्थान पर ले गये। उन्हें कमरा देने के बाद अत्यन्त प्रसन्न होकर शिवानन्द सेन ने इस प्रकार कहा।

"आजि मोरे भृत्य करि' अङ्गीकार कैला ।
येमन अपराध भृत्यैर, योग्य फल दिला ॥ २७ ॥

"आजि मोरे भृत्य करि' अङ्गीकार कैला ।
ग्रेमन अपराध भृत्येर, ग्रोग्य फल दिला ॥ २७ ॥

आजि—आज; **मोरे**—मुझे; **भृत्य**—सेवक; **करि'**—के रूप में; **अङ्गीकार**—स्वीकार; **कैला**—आपने किया; **ग्रेमन**—यह; **अपराध**—अपराध; **भृत्येर**—सेवक के; **ग्रोग्य**—योग्य; **फल**—फल; **दिला**—आपने दिया।

अनुवाद

"आज आपने मुझे अपने सेवक के रूप में स्वीकार किया है और मेरे अपराध के लिए उचित दण्ड भी दिया है।

'शान्ति'-छले कृपा कर,—এ তোমার 'করুণা' ।
ত্রিজগতে তোমার চরিত্র বুঝে কোন্‌জনা? ॥২৮॥

'शास्ति'-छले कृपा कर,—ए तोमार 'करुणा' ।
त्रिजगते तोमार चरित्र बुझे कोन् जना? ॥ २८ ॥

शास्ति-छले—दण्ड के बहाने; **कृपा कर**—आप कृपा करते हैं; **ए**—यह; **तोमार करुणा**—आपकी अहैतुकी कृपा; **त्रि-जगते**—तीनों लोकों में; **तोमार**—आपके; **चरित्र**—चरित्र; **बुझे**—को समझे; **कोन् जना**—ऐसा कौन।

अनुवाद

"हे प्रभु, आपके द्वारा दिया गया दण्ड आपकी अहैतुकी कृपा है। तीनों लोकों में ऐसा कौन है, जो आपके वास्तविक चरित्र को समझ सके?

ব্রহ্মার দুর্লভ তোমার শ্রী-চরণ-রেণু ।
হেন চরণ-স্পর্শ পাইল মোর অধম তনু ॥২৯॥

ब्रह्मार दुर्लभ तोमार श्री-चरण-रेणु ।
हेन चरण-स्पर्श पाइल मोर अधम तनु ॥ २९ ॥

ब्रह्मार—ब्रह्माजी द्वारा; **दुर्लभ**—प्राप्य नहीं; **तोमार**—आपके; **श्री-चरण-रेणु**—चरणकमलों की धूल; **हेन**—फिर भी; **चरण-स्पर्श**—चरणकमलों का स्पर्श; **पाइल**—मिला; **मोर**—मेरे; **अधम**—अधम; **तनु**—शरीर का।

अनुवाद

"आपके चररकमलों की धूल ब्रह्मा तक को प्राप्य नहीं है। फिर भी आपके चरणकमलों ने मेरे अधम शरीर का स्पर्श किया है।

আজি মোর সফল হৈল জন্ম, কুল, কর্ম ।
আজি পাইনু কৃষ্ণ-ভক্তি, অর্থ, কাম, ধর্ম" ॥৩০॥

आजि मोर सफल हैल जन्म, कुल, कर्म ।
आजि पाइनु कृष्ण-भक्ति, अर्थ, काम, धर्म" ॥ ३० ॥

आजि—आज; **मोर**—मेरा; **स-फल**—सफल; **हैल**—हुआ; **जन्म**—जन्म; **कुल**—परिवार; **कर्म**—कर्म; **आजि**—आज; **पाइनु**—मैंने प्राप्त की; **कृष्ण-भक्ति**—कृष्ण की भक्ति; **अर्थ**—आर्थिक सफलता; **काम**—काम; **धर्म**—धर्म।

अनुवाद

"आज मेरा जन्म, मेरा परिवार तथा मेरे कर्म सभी सफल हो गये। आज मैंने धर्म, अर्थ, काम तथा अन्ततः भगवान् कृष्ण की भक्ति प्राप्त की है।"

शुनि' नित्यानन्द-प्रभुर आनन्दित मन ।
उठि' शिवानन्दे कैला प्रेम-आलिङ्गन ॥ ३१ ॥

शुनि'—सुनकर; **नित्यानन्द-प्रभुर**—नित्यानन्द प्रभु; **आनन्दित**—अत्यधिक प्रसन्न हुए; **मन**—मन; **उठि'**—उठकर; **शिवानन्दे**—शिवानन्द सेन को; **कैला**—किया; **प्रेम**—प्रेमवश; **आलिङ्गन**—आलिंगन।

अनुवाद

जब नित्यानन्द प्रभु ने यह सुना, तो वे अत्यधिक प्रसन्न हुए। उन्होंने उठकर अत्यन्त प्रेमवश शिवानन्द का आलिंगन कर लिया।

आनन्दित शिवानन्द करे समाधान ।
आचार्यादि-वैष्णवेरे दिला वासा-स्थान ॥ ३२ ॥

आनन्दित—प्रसन्न होकर; **शिवानन्द**—शिवानन्द सेन; **करे समाधान**—व्यवस्था करने लगे; **आचार्य-आदि-वैष्णवेरे**—अद्वैत आचार्य तथा सारे वैष्णवों के लिए; **दिला**—दिया; **वासा-स्थान**—निवासस्थान।

अनुवाद

नित्यानन्द प्रभु के व्यवहार से अत्यधिक प्रसन्न होकर शिवानन्द सेन अद्वैत आचार्य इत्यादि सारे वैष्णवों के लिए निवासस्थान की व्यवस्था करने में लग गये।

নিত্যানন্দ-প্রভুর সব চরিত্র—'বিপরীত' ।
ক্রুদ্ধ হঞা লাথি মারি' করে তার হিত ॥৩৩॥

নিত্যানন্দ-প্রভুর সব চরিত্র—'বিপরীত' ।
ক্রুদ্ধ হঞা লাথি মারি' করে তার হিত ॥ ৩৩ ॥

নিত্যানন্দ-প্রভুর—नित्यानन्द प्रभु का; **सब चरित्र**—सब चरित्र; **विपरीत**—विपरित; **क्रुद्ध हञा**—क्रुद्ध होकर; **लाथि मारि'**—लात मारी; **करे**—किया; **तार हित**—उसके हित।

अनुवाद

नित्यानन्द प्रभु का विपरीत स्वभाव उनकी विशेषता है। जब वे क्रुद्ध होकर किसी पर पाद-प्रहार करते हैं, तो वस्तुतः वह उसके हित में होता है।

শিবানন্দের ভাগিনা,—শ্রীকান্ত-সেন নাম ।
মামার অগোচরে কহে করি' অভিমান ॥৩৪॥

শিবানন্দের ভাগিনা,—শ্রীকান্ত-সেন নাম ।
মামার অগোচরে কহে করি' অভিমান ॥ ৩৪ ॥

শিবানন্দের—शिवानन्द सेन के; **ভাগিনা**—बहन का बेटा (भाँजा); **শ্রীকান্ত-সেন নাম**—श्रीकान्त सेन नामक; **মামার**—उनके मामा; **অগোচরে**—उनके न होने पर; **কহে**—कहा; **করি' অভিমান**—उनके असन्तुष्ट के मन के साथ।

अनुवाद

शिवानन्द सेन के भाँजे श्रीकान्त ने अपने आपको अपमानित अनुभव किया और जब उसके मामा नहीं थे, तब उसने इस विषय पर टिप्पणी की।

"চৈতন্যের পারিষদ মোর মাতুলের খ্যাতি ।
'ঠাকুরালী' করেন গোসাঞি, তাঁরে মারে লাথি" ॥৩৫॥

"चैतन्येर पारिषद मोर मातुलेर ख्याति ।
'ठाकुराली' करेन गोसाञि, ताँरे मारे लाथि" ॥ ३५ ॥

चैतन्येर पारिषद—श्री चैतन्य महाप्रभु के संगी; **मोर**—मेरे; **मातुलेर**—मामा; **ख्याति**—ख्याति; **ठाकुराली**—श्रेष्ठता; **करेन**—दिखाना; **गोसाञि**—नित्यानन्द प्रभु; **ताँरे**—उनको; **मारे लाथि**—लात मारना।

अनुवाद

"मेरे मामा श्री चैतन्य महाप्रभु के संगियों में से एक हैं, किन्तु नित्यानन्द प्रभु उन पर पाद-प्रहार करके अपनी श्रेष्ठता दिखाना चाहते हैं।"

এত বলি' শ্রীকান্ত, বালক আগে চলি' যান ।
সঙ্গ ছাড়ি' আগে গেলা মহাপ্রভুর স্থান ॥ ৩৬ ॥
এত বলি' শ্রীকান্ত, বালক আগে চলি' য়ান ।
সঙ্গ ছাড়ি' আগে গেলা মহাপ্রভুর স্থান ॥ ৩৬ ॥

এত বলি'—यह कहकर; **श्रीकान्त**—शिवानन्द सेन का भाँजा; **बालक**—बच्चा; **आगे चलि' य़ान**—आगे चला; **सङ्ग छाड़ि'**—उनका संग छोड़कर; **आगे**—आगे; **गेला**—गया; **महाप्रभुर स्थान**—चैतन्य महाप्रभु के वास स्थान पर।

अनुवाद

यह कहकर श्रीकान्त, जो कि अभी बच्चा था, अपनी टोली छोड़कर अकेले ही चैतन्य महाप्रभु के निवासस्थान पर चला गया।

পেটাঙ্গি-গায় করে দণ্ডবত্নমস্কার ।
গোবিন্দ কহে,—'শ্রীকান্ত, আগে পেটাঙ্গি উতার' ॥ ৩৭ ॥
पेटाङ्गि-गाय करे दण्डवत् नमस्कार ।
गोविन्द कहे,—'श्रीकान्त, आगे पेटाङ्गि उतार' ॥ ३७ ॥

पेटाङ्गि—शर्ट और कोट; **गाय**—शरीर के ऊपर; **करे**—पहना; **दण्डवत्-नमस्कार**—नमस्कार किया; **गोविन्द कहे**—गोविन्द ने कहा; **श्रीकान्त**—मेरे प्रिय श्रीकान्त; **आगे**—पहले; **पेटाङ्गि उतार**—अपना शर्ट और कोट उतारो।

अनुवाद

जब श्रीकान्त ने महाप्रभु को नमस्कार किया, तो वह अपनी कमीज तथा कोट पहने था। इसलिए गोविन्द ने उससे कहा, "हे श्रीकान्त, सर्वप्रथम अपने कपड़ों को उतार डालो।"

तात्पर्य

कमीज अथवा कोट पहनकर अर्चाविग्रह के कक्ष में प्रवेश करना अथवा उन्हें कोई भेंट देना वर्जित है। तन्त्रों में कहा गया है :

वस्त्रेणावृत-देहस्तु यो नरः प्रणमेद हरिम्।
श्वित्री भवति मूढात्मा सप्त जन्मानि भाविनि॥

"जो अर्चाविग्रह को शरीर के ऊपरी भाग में वस्त्र पहनकर नमस्कार करता है, वह सात जन्मों के लिए कोढ़ी रहता है।"

प्रभु कहे,—"श्रीकान्त आसियाछे पाञा मनो-दुःख ।
किछु ना बलिह, करुक, याते इहार सुख" ॥ ३८॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **श्रीकान्त**—श्रीकान्त; **आसियाछे**—आया है; **पाञा**—पाकर; **मनः-दुःख**—मन में दुःखी; **किछु**—कुछ भी; **ना बलिह**—न बोलो; **करुक**—जो चाहे करने दो; **याते**—जिससे; **इहार**—उसका; **सुख**—आनन्द।

अनुवाद

जब गोविन्द श्रीकान्त को सावधान कर रहा था, तब महाप्रभु ने कहा, "उसे तंग मत करो। श्रीकान्त जो चाहे सो करने दो, क्योंकि वह यहाँ अत्यन्त दुःखी मानसिक अवस्था में आया है।"

বৈষ্ণবের সমাচার গোসাঞি পুছিলা ।
একে একে সবার নাম শ্রীকান্ত জানাইলা ॥৩৯॥

वैष्णवेर समाचार गोसाञि पुछिला ।
एके एके सबार नाम श्रीकान्त जानाइला ॥ ३९॥

वैष्णवेर—सभी वैष्णवों का; **समाचार**—समाचार; **गोसाञि**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **पुछिला**—पूछा; **एके एके**—एक के बाद एक; **सबार**—सबों के; **नाम**—नाम; **श्रीकान्त**—शिवानन्द सेन के भाँजे ने; **जानाइला**—सूचित किया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने श्रीकान्त से समस्त वैष्णवों के विषय में पूछा और उस बालक ने सबों का नाम लेकर उनके विषय में महाप्रभु को सूचित किया।

'दुःख पाञा आसियाछे'—एই प्रভুর বাক্য শুনি' ।
জানিলা 'সর্বজ্ঞ প্রভু'—এত অনুমানি' ॥৪০॥

'दुःख पाञा आसियाछे'—एइ प्रभुर वाक्य शुनि' ।
जानिला 'सर्वज्ञ प्रभु'—एत अनुमानि' ॥४०॥

दुःख—दुःख; **पाञा**—पाकर; **आसियाछे**—वह आया है; **एइ**—यह; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **वाक्य**—वाक्य; **शुनि'**—सुनकर; **जानिला**—समझ गया; **सर्वज्ञ प्रभु**—महाप्रभु सर्वज्ञ हैं; **एत**—यह; **अनुमानि'**—अनुमान।

अनुवाद

जब श्रीकान्त सेन ने महाप्रभु को यह कहते सुना कि, "वह दुःखी है," तो वह समझ गया कि महाप्रभु सर्वज्ञ हैं।

শিবানন্দে লাথি মারিলা,—ইহা না কহিলা ।
এথা সব বৈষ্ণব-গণ আসিয়া মিলিলা ॥৪১॥

शिवानन्दे लाथि मारिला,—इहा ना कहिला ।
एथा सब वैष्णव-गण आसिया मिलिला ॥४१॥

शिवानन्दे—शिवानन्द सेन; **लाथि मारिला**—(नित्यानन्द प्रभु) लात मारी; **इहा**—यह; **ना कहिला**—कुछ नहीं कहा; **एथा**—यहाँ; **सब**—सब; **वैष्णव-गण**—भक्त; **आसिया**—आकर; **मिलिला**—मिलने गये।

अनुवाद

इसलिए जब उसने वैष्णवों का हाल बतलाया, तब उसने नित्यानन्द

प्रभु द्वारा शिवानन्द सेन पर पाद-प्रहार किये जाने का उल्लेख नहीं किया। इस बीच सारे भक्त आ गये और महाप्रभु से मिलने गये।

পূর্ববৎপ্রভু কৈলা সবার মিলন ।
স্ত্রী-সব দূর হ-ইতে কৈলা প্রভুর দরশন ॥ ৪২ ॥

पूर्ववत् प्रभु कैला सबार मिलन ।
स्त्री-सब दूर ह-इते कैला प्रभुर दरशन ॥ ४२ ॥

पूर्व-वत्—पहले की तरह; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कैला**—किया; **सबार मिलन**—सबसे मिलन; **स्त्री**—स्त्री; **सब**—सब; **दूर ह-इते**—दूर से; **कैला**—किया; **प्रभुर दरशन**—महाप्रभु का दर्शन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने पहले के वर्षों की तरह उन सभी का स्वागत किया। किन्तु स्त्रियों ने दूर से महाप्रभु का दर्शन किया।

বাসা-ঘর পূর্ববৎসবারে দেওয়াইলা ।
মহাপ্রসাদ-ভোজনে সবারে বোলাইলা ॥ ৪৩ ॥

वासा-घर पूर्ववत् सबारे देओयाइला ।
महाप्रसाद-भोजने सबारे बोलाइला ॥ ४३ ॥

वासा-घर—निवासीय कमरे; **पूर्व-वत्**—पहले की तरह; **सबारे**—सबों को; **देओयाइला**—दिलवाया; **महा-प्रसाद**—जगन्नाथजी का प्रसाद; **भोजने**—खाने; **सबारे**—सबों को; **बोलाइला**—उन्होंने बुलाया।

अनुवाद

महाप्रभु ने फिर से सारे भक्तों के लिए निवासीय कमरों का प्रबन्ध किया और उसके बाद जगन्नाथजी का प्रसाद पाने के लिए सबों को बुलाया।

শিবানন্দ তিন-পুত্রে গোসাঞিরে মিলাইলা ।
শিবানন্দ-সম্বন্ধে সবায় বহু-কৃপা কৈলা ॥ ৪৪ ॥

शिवानन्द तिन-पुत्रे गोसाञिरे मिलाइला ।
शिवानन्द-सम्बन्धे सबाय बहु-कृपा कैला ॥ ४४ ॥

शिवानन्द—शिवानन्द सेन; **तिन-पुत्रे**—तीन पुत्र; **गोसाञिरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु से; **मिलाइला**—परिचय कराया; **शिवानन्द-सम्बन्धे**—क्योंकि वे शिवानन्द सेन के पुत्र थे; **सबाय**—उन सब पर; **बहु-कृपा कैला**—अत्यधिक कृपा प्रदर्शित की।

अनुवाद

शिवानन्द सेन ने श्री चैतन्य महाप्रभु से अपने तीनों पुत्रों का परिचय कराया। चूँकि वे उनके पुत्र थे, इसलिए महाप्रभु ने इन बालकों पर अत्यधिक कृपा प्रदर्शित की।

ছোট-পুত্রে দেখি' প্রভু নাম পুছিলা ।
'পরমানন্দ-দাস'-নাম সেন জানাইলা ॥ ৪৫ ॥

छोट-पुत्रे देखि' प्रभु नाम पुछिला ।
'परमानन्द-दास'-नाम सेन जानाइला ॥ ४५ ॥

छोट-पुत्रे—छोटे पुत्र; **देखि'**—देखकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **नाम पुछिला**—उसका नाम पूछा; **परमानन्द-दास**—परमानन्द दास; **नाम**—नाम; **सेन**—शिवानन्द सेन; **जानाइला**—बतलाया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने शिवानन्द सेन के सबसे छोटे पुत्र का नाम पूछा, तो शिवानन्द सेन ने उसका नाम परमानन्द दास बतलाया।

পূর্বে যবে শিবানন্দ প্রভু-স্থানে আইলা ।
তবে মহাপ্রভু তাঁরে কহিতে লাগিলা ॥ ৪৬ ॥
''এ-বার তোমার যেই হ-ইবে কুমার ।
'পুরী-দাস' বলি' নাম ধরিহ তাহার ॥ ৪৭ ॥

पूर्वे यबे शिवानन्द प्रभु-स्थाने आइला ।
तबे महाप्रभु ताँरे कहिते लागिला ॥ ४६ ॥
"ए-बार तोमार येइ ह-इबे कुमार ।
'पुरी-दास' बलि' नाम धरिह ताहार ॥ ४७ ॥

पूर्वे—पहले; **यबे**—जब; **शिवानन्द**—शिवानन्द सेन; **प्रभु-स्थाने**—श्री चैतन्य महाप्रभु के स्थान पर; **आइला**—आये; **तबे**—उस समय; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँरे**—उनको; **कहिते लागिला**—कहने लगे; **ए-बार**—इस समय; **तोमार**—तुम्हें; **येइ**—यह; **ह-इबे**—होगा; **कुमार**—पुत्र; **पुरी-दास**—पुरी दास; **बलि'**—इसका; **नाम**—नाम; **धरिह**—देना; **ताहार**—इसका।

अनुवाद

एक बार जब शिवानन्द सेन श्री चैतन्य महाप्रभु से उनके स्थान पर मिले थे, तब महाप्रभु ने उनसे कहा था, "जब तुम्हें यह पुत्र जन्मे, तो इसका नाम पुरी दास रखना।"

তবে মায়ের গর্ভে হয় সেই ত' কুমার ।
শিবানন্দ ঘরে গেলে, জন্ম হৈল তার ॥৪৮॥

तबे मायेर गर्भे हय सेइ त' कुमार ।
शिवानन्द घरे गेले, जन्म हैल तार ॥४८॥

तबे—तब; **मायेर गर्भे**—माँ के गर्भ में; **हय**—था; **सेइ त' कुमार**—वह पुत्र; **शिवानन्द घरे गेले**—जब शिवानन्द सेन घर लौटे; **जन्म हैल तार**—वह उत्पन्न हुआ था।

अनुवाद

तब यह पुत्र शिवानन्द की पत्नी के गर्भ में था और जब वे घर लौटे, तब पुत्र उत्पन्न हुआ।

প্রভু-আজ্ঞায় ধরিলা নাম—'পরমানন্দ-দাস' ।
'পুরী-দাস' করি' প্রভু করেন উপহাস ॥৪৯॥

प्रभु-आज्ञाय धरिला नाम—'परमानन्द-दास' ।
'पुरी-दास' करि' प्रभु करेन उपहास ॥४९॥

प्रभु-आज्ञाय—श्री चैतन्य महाप्रभु की आज्ञा पर; **धरिला नाम**—नाम रखा; **परमानन्द-दास**—परमानन्द दास; **पुरी-दास**—पुरी दास; **करि'**—किया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करेन उपहास**—हँस-हँसकर।

अनुवाद

महाप्रभु की आज्ञा के अनुसार बच्चे का नाम परमानन्द दास रखा गया और महाप्रभु ने हँसी-हँसी में उसे पुरी दास कहा।

শিবানন্দ যবে সেই বালকে মিলাইলা ।
মহাপ্রভু পাদাঙ্গুষ্ঠ তার মুখে দিলা ॥৫০॥

শিবানন্দ য়বে সেइ বালকে মিলাইলা ।
মহাপ্রভু পাদাঙ্গুষ্ঠ তার মুখে দিলা ॥৫০॥

शिवानन्द—शिवानन्द सेन; **य्रबे**—जब; **सेइ**—वह; **बालके**—बालक; **मिलाइला**—परिचय; **महाप्रभु**—महाप्रभु; **पाद-अङ्गुष्ठ**—अगूँठा; **तार**—उसके; **मुखे**—मुँह में; **दिला**—डाल दिया।

अनुवाद

जब शिवानन्द सेन ने इस बालक का परिचय श्री चैतन्य महाप्रभु से कराया, तब महाप्रभु ने उसके मुँह में अपना अँगूठा डाल दिया।

तात्पर्य

इस सम्बन्ध में महाप्रभु ने जो बाद में कृपा की, उसके लिए देखें अन्त्य लीला, अध्याय १६ श्लोक ६५-७५।

শিবানন্দের ভাগ্য-সিন্ধু কে পাইবে পার? ।
যাঁর সব গোষ্ঠীকে প্রভু কহে 'আপনার' ॥৫১॥

শিবানন্দের ভাগ্য-সিন্ধু কে পাইবে পার? ।
য়াঁর সব গোষ্ঠীকে প্রভু কহে 'আপনার' ॥৫১॥

शिवानन्देर—शिवानन्द सेन के; **भाग्य-सिन्धु**—सौभाग्य रूपी सागर; **के**—जो; **पाइबे पार**—लाँघ सकता है; **य्राँर**—जिसका; **सब गोष्ठीके**—समस्त परिवार को; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कहे**—कहा; **आपनार**—अपना।

अनुवाद

शिवानन्द सेन के सौभाग्य रूपी सागर को कोई लाँघ नहीं सकता, क्योंकि महाप्रभु शिवानन्द के समस्त परिवार को अपना मानते थे।

তবে সব ভক্ত লঞা করিলা ভোজন ।
গোবিন্দেরে আজ্ঞা দিলা করি' আচমন ॥৫২॥

তবে সব ভক্ত লঞা করিলা ভোজন ।
গোবিন্দেরে আজ্ঞা দিলা করি' আচমন ॥৫২॥

तबे सब भक्त लञा करिला भोजन ।
गोविन्देरे आज्ञा दिला करि' आचमन ॥५२॥

तबे—तब; **सब भक्त लञा**—सभी भक्तों के साथ; **करिला भोजन**—भोजन किया; **गोविन्देरे**—गोविन्द को; **आज्ञा दिला**—आज्ञा दी; **करि' आचमन**—हाथ और मुँह धोने के बाद।

अनुवाद

महाप्रभु ने अन्य सारे भक्तों के साथ भोजन किया और हाथ-मुँह धोने के बाद गोविन्द को यह आज्ञा दी।

"शिवानन्देर 'प्रकृति', पुत्र—यावतेथाय ।
आमार अवशेष-पात्र तारा येन पाय" ॥५३॥

"शिवानन्देर 'प्रकृति', पुत्र—यावतेथाय ।
आमार अवशेष-पात्र तारा येन पाय" ॥५३॥

शिवानन्देर—शिवानन्द सेन की; **प्रकृति**—पत्नी; **पुत्र**—पुत्र; **यावत्**—जब तक; **एथाय**—यहाँ; **आमार**—मेरे; **अवशेष-पात्र**—भोजन के अवशेष के थाली; **तारा**—उन सभी को; **येन**—दिया; **पाय**—जाय।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "जब तक शिवानन्द सेन की पत्नी तथा उसके पुत्र जगन्नाथपुरी में रुकें, उन्हें मेरे भोजन का शेष दिया जाय।"

नदीया-वासी मोदक, तार नाम—'परमेश्वर' ।
मोदक वेचे, प्रभुर वाटीर निकट तार घर ॥५४॥

नदीया-वासी मोदक, तार नाम—'परमेश्वर' ।
मोदक वेचे, प्रभुर वाटीर निकट तार घर ॥५४॥

नदीया-वासी—नदिया के निवासी; **मोदक**—एक हलवाई; **तार नाम**—उसका नाम; **परमेश्वर**—परमेश्वर; **मोदक वेचे**—उसका हलवाई का व्यापार था; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **वाटीर निकट**—घर के पास; **तार घर**—उसका घर।

अनुवाद

नदिया के निवासी परमेश्वर नाम के एक हलवाई (मोदक) थे, जो श्री चैतन्य महाप्रभु के घर के समीप रहते थे।

বালক-কালে প্রভু তার ঘরে বার বার যা'ন ।
দুগ্ধ, খণ্ড মোদক দেয়, প্রভু তাহা খা'ন ॥৫৫॥

বালক-কালে প্রভু তার ঘরে বার বার য়া' ন ।
দুগ্ধ, খণ্ড মোদক দেয়, প্রভু তাহা খা' ন ॥৫৫॥

बालक-काले—बाल्य काल में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **तार घरे**—इस घर में; **बार बार**—बारम्बार; **य़ा'न**—जाते थे; **दुग्ध**—दूध; **खण्ड**—मिठाइयाँ; **मोदक देय**—हलवाई देते थे; **प्रभु**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताहा**—वह; **खा'न**—खाते थे।

अनुवाद

जब महाप्रभु बालक थे, तब वे परमेश्वर मोदक के घर बारम्बार जाते थे। वह हलवाई उन्हें दूध तथा मिठाइयाँ देता और महाप्रभु उन्हें खाते थे।

প্রভু-বিষয়ে স্নেহ তার বালক-কাল হৈতে ।
সে বৎসর সেহ আইল প্রভুরে দেখিতে ॥৫৬॥

প্রভু-বিষয়ে স্নেহ তার বালক-কাল হৈতে ।
সে বৎসর সেহ আইল প্রভুরে দেখিতে ॥৫৬॥

प्रभु-विषये—श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रति; **स्नेह**—स्नेहिल; **तार**—परमेश्वर मोदक से; **बालक-काल हैते**—जबसे वे बालक थे; **से वत्सर**—इस वर्ष; **सेह**—वह भी; **आइल**—आये; **प्रभुरे देखिते**—प्रभु के दर्शन करने।

अनुवाद

परमेश्वर मोदक बाल्यकाल से ही महाप्रभु के प्रति स्नेहिल थे और वे भी इस वर्ष जगन्नाथपुरी महाप्रभु के दर्शनार्थ आये थे।

'পরমেশ্বরা মুঞি' বলি' দণ্ডবৎকৈল ।
তারে দেখি' প্রভু প্রীতে তাহারে পুছিল ॥৫৭॥

'পরমেশ্বরা মুঞি' বলি' দণ্ডবৎ কৈল ।
তারে দেখি' প্রভু প্রীতে তাহারে পুছিল ॥৫৭॥

परमेश्वरा—परमेश्वर; **मुञि'**—मैं; **बलि'**—कहकर; **दण्डवत् कैल**—नमस्कार किया; **तारे**—उनको; **देखि'**—देखकर; **प्रभु**—महाप्रभु; **प्रीते**—स्नेह के साथ; **ताहारे**—उनको; **पुछिल**—पूछा।

अनुवाद

उन्होंने महाप्रभु को नमस्कार करके कहा, "मैं वही परमेश्वर हूँ।" उन्हें देखकर महाप्रभु ने उनसे अत्यन्त स्नेह के साथ प्रश्न पूछे।

'परमेश्वर कुशल हও, ভাল হৈল, আইলা' ।
'মুকুন্দার মাতা আসিয়াছে' সেহ প্রভুরে কহিলা ॥৫৮॥

'परमेश्वर कुशल हओ, भाल हैल, आइला' ।
'मुकुन्दार माता आसियाछे' सेह प्रभुरे कहिला ॥५८॥

परमेश्वर—हे परमेश्वर; **कुशल हओ**—मंगल हो; **भाल हैल**—अच्छा हुआ; **आइला**—आप आये; **मुकुन्दार माता**—मुकुन्द की माता; **आसियाछे**—आयी है; **सेह**—वे; **प्रभुरे कहिला**—प्रभु को बतलाया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "हे परमेश्वर, आपका मंगल हो। अच्छा हुआ कि आप यहाँ आये हो।" तब परमेश्वर ने महाप्रभु को बतलाया, "मुकुन्द की माता भी आई है।"

মুকুন্দার মাতার নাম শুনি' প্রভু সঙ্কোচ হৈলা ।
তথাপি তাহার প্রীতে কিছু না বলিলা ॥৫৯॥

मुकुन्दार मातार नाम शुनि' प्रभु सङ्कोच हैला ।
तथापि ताहार प्रीते किछु ना बलिला ॥५९॥

मुकुन्दार मातार—मुकुन्द की माताजी; **नाम**—नाम; **शुनि'**—सुनकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सङ्कोच हैला**—संकोच हुआ; **तथापि**—तथापि; **ताहार**—परमेश्वर को; **प्रीते**—स्नेहवश; **किछु**—कुछ भी; **ना बलिला**—नहीं कहा।

अनुवाद

मुकुन्दार माता का नाम सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु को संकोच हुआ, किन्तु परमेश्वर के स्नेहवश उन्होंने कुछ नहीं कहा।

तात्पर्य

संन्यासी को तो स्त्री का नाम सुनना भी निषिद्ध है और श्री चैतन्य महाप्रभु अपने व्रत पालन में अत्यन्त कठोर थे। परमेश्वर ने महाप्रभु को बताया कि

उसकी पत्नी मुकुन्दार माता भी उनके साथ आई है। उन्हें उसका उल्लेख नहीं करना चाहिए था, इसीलिए महाप्रभु को क्षणभर संकोच हुआ, किन्तु परमेश्वर के प्रति स्नेह के कारण वे कुछ बोले नहीं। श्री चैतन्य महाप्रभु परमेश्वर मोदक को अपने बचपन से जानते थे, इसीलिए परमेश्वर ने अपनी पत्नी के आने की बात बिना सोचे-विचारे महाप्रभु से बतलाई।

प्रश्रय-पागल शुद्ध-वैदग्धी ना जाने ।
अन्तरे सुखी हैला प्रभु तार सेइ गुणे ॥६०॥

प्रश्रय-पागल शुद्ध-वैदग्धी ना जाने ।
अन्तरे सुखी हैला प्रभु तार सेइ गुणे ॥ ६० ॥

प्रश्रय—घनिष्ठता; **पागल**—पागल; **शुद्ध**—शुद्ध; **वैदग्धी**—शिष्टाचार; **ना जाने**—नहीं जानते; **अन्तरे**—मन से; **सुखी हैला**—सुखी हुए; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **तार**—उनके; **सेइ गुणे**—वास्तव में।

अनुवाद

घनिष्ठता के कारण कभी-कभी सामान्य शिष्टाचार का उल्लंघन हो जाता है। अतएव परमेश्वर ने अपने सरल तथा स्नेहमय आचरण से वास्तव में महाप्रभु के अन्तर को सुखी बनाया।

तात्पर्य

प्रश्रय का अर्थ है स्नेह, दीनता, श्रद्धा या विशेष अनुग्रह की माँग या ऐसी ही छूटों में लिप्त होना। *पागल* का अर्थ है औद्धत्य, प्रगल्भता और प्रभाव। *वैदग्धी* का अर्थ है चतुरता, रसिकता, सौन्दर्य, पटुता, विद्या, भंगी तथा आचरण।

पूर्ववज्जबा लञा गुण्डिचा-मार्जन ।
रथ-आगे पूर्ववत्करिला नर्तन ॥६१॥

पूर्ववत् सबा लञा गुण्डिचा-मार्जन ।
रथ-आगे पूर्ववत् करिला नर्तन ॥ ६१ ॥

पूर्व-वत्—पहले की तरह; **सबा**—सारे भक्तों ने; **लञा**—लिया; **गुण्डिचा-मार्जन**—गुण्डिचा मार्जन; **रथ-आगे**—रथ के आगे; **पूर्व-वत्**—पहले की तरह; **करिला नर्तन**—नृत्य किया।

अनुवाद

सारे भक्तों ने गुण्डिचा मन्दिर-मार्जन में भाग लिया और रथयात्रा में रथ के समक्ष उसी तरह नृत्य किया, जिस तरह उन्होंने पहले किया था।

চাতুর্মাস্য সব যাত্রা কৈলা দরশন ।
মালিনী-প্রভৃতি প্রভুরে কৈলা নিমন্ত্রণ ॥৬২॥

चातुर्मास्य सब यात्रा कैला दरशन ।
मालिनी-प्रभृति प्रभुरे कैला निमन्त्रण ॥६२॥

चातुर्मास्य—चार महीनों के लिए; **सब यात्रा**—सारे उत्सव; **कैला दरशन**—देखे; **मालिनी-प्रभृति**—श्रीवास ठाकुर की पत्नी मालिनी जैसी महिलाएँ; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **कैला निमन्त्रण**—निमन्त्रण किया।

अनुवाद

भक्तों ने चार महीनों तक सारे उत्सव मनाये। मालिनी इत्यादि पत्नियों ने श्री चैतन्य महाप्रभु को भोजन के लिए निमन्त्रण भेजा।

প্রভুর প্রিয় নানা দ্রব্য আনিয়াছে দেশ হৈতে ।
সেই ব্যঞ্জন করি' ভিক্ষা দেন ঘর-ভাতে ॥৬৩॥

प्रभुर प्रिय नाना द्रव्य आनियाछे देश हैते ।
सेइ व्यञ्जन करि' भिक्षा देन घर-भाते ॥६३॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **प्रिय**—प्रिय (पसन्द); **नाना द्रव्य**—नाना प्रकार के; **आनियाछे**—आये थे; **देश हैते**—अपने देश से; **सेइ व्यञ्जन करि'**—तैयार हुई तरकारियाँ; **भिक्षा देन**—दान दिया; **घर-भाते**—घर पर पकाई हुई।

अनुवाद

भक्तगण अपने साथ बंगाल से नाना प्रकार के बंगाली भोजन ले आये थे, जो श्री चैतन्य महाप्रभु को पसन्द थे। उन्होंने अपने घरों में विविध अन्न तथा तरकारियाँ भी पकाईं और उन्हें महाप्रभु को दिया।

দিনে নানা ক্রীড়া করে লঞা ভক্ত-গণ ।
রাত্র্যে কৃষ্ণ-বিচ্ছেদে প্রভু করেন রোদন ॥৬৪॥

दिने नाना क्रीड़ा करे लञा भक्त-गण ।
रात्रे कृष्ण-विच्छेदे प्रभु करेन रोदन ॥ ६४॥

दिने—दिन में; **नाना**—विविध; **क्रीड़ा करे**—कार्यों में लगे; **लञा भक्त-गण**—अपने भक्तों के साथ; **रात्रे**—रात्रि में; **कृष्ण-विच्छेदे**—कृष्ण के महान् विरह; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करेन रोदन**—रोते।

अनुवाद

दिन में श्री चैतन्य महाप्रभु अपने भक्तों के साथ विविध कार्यों में लगे रहते, किन्तु रात्रि में कृष्ण के महान् विरह का अनुभव करते हुए अश्रु बहाते।

एइ-मत नाना-लीलाय चातुर्मास्य गेल ।
गौड़-देशे याइते तबे भक्ते आज्ञा दिल ॥ ६५॥

एइ-मत नाना-लीलाय चातुर्मास्य गेल ।
गौड़-देशे याइते तबे भक्ते आज्ञा दिल ॥ ६५॥

एइ-मत—इस तरह; **नाना-लीलाय**—नाना प्रकार की लीलाओं में; **चातुर्मास्य गेल**—वर्षाऋतु के चार मास व्यतीत हो गये; **गौड़-देशे याइते**—बंगाल वापस जाने के लिए; **तबे**—तब; **भक्ते**—सारे भक्त; **आज्ञा दिल**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने आज्ञा दी।

अनुवाद

इस तरह महाप्रभु ने नाना प्रकार की लीलाओं में वर्षाऋतु के चार मास व्यतीत किये और तब बंगाली भक्तों को अपने-अपने घर लौट जाने की आज्ञा दी।

सब भक्त करेन महाप्रभुर निमन्त्रण ।
सर्व-भक्ते कहेन प्रभु मधुर वचन ॥ ६६॥

सब भक्त करेन महाप्रभुर निमन्त्रण ।
सर्व-भक्ते कहेन प्रभु मधुर वचन ॥ ६६॥

सब भक्त—सारे भक्त; **करेन महाप्रभुर निमन्त्रण**—श्री चैतन्य महाप्रभु को भोजन के लिए आमन्त्रित करते रहते; **सर्व-भक्ते**—सारे भक्तों को; **कहेन**—कहा; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **मधुर वचन**—मधुर शब्द।

अनुवाद

बंगाल के सारे भक्त श्री चैतन्य महाप्रभु को नियमित रूप से भोजन के लिए आमन्त्रित करते रहते और महाप्रभु उनसे अत्यन्त मधुर शब्द कहते।

"प्रति-वर्षे आइस सबे आमारे देखिते ।
आसिते याइते दुःख पाओ बहु-मते ॥ ६७॥

"प्रति-वर्षे आइस सबे आमारे देखिते ।
आसिते याइते दुःख पाओ बहु-मते ॥ ६७॥

प्रति-वर्षे—प्रतिवर्ष; **आइस**—आते हो; **सबे**—तुम सब; **आमारे देखिते**—मुझे मिलने के लिए; **आसिते**—आने में; **याइते**—लौटने में; **दुःख पाओ**—तुम्हें अवश्य ही भारी कष्ट होता होगा; **बहु-मते**—विविध रूप से।

अनुवाद

महाप्रभु ने कहा, "तुम सब लोग प्रतिवर्ष मुझे मिलने आते रहते हो। यहाँ आने तथा लौटने में तुम लोगों को अवश्य ही भारी कष्ट होता होगा।

तोमा-सवार दुःख जानि' चाहि निषेधिते ।
तोमा-सवार सङ्ग-सुखे लोभ बाड़े चित्ते ॥ ६८॥

तोमा-सबार दुःख जानि' चाहि निषेधिते ।
तोमा-सबार सङ्ग-सुखे लोभ बाड़े चित्ते ॥ ६८॥

तोमा-सबार—तुम सब का; **दुःख**—दुःख; **जानि'**—समझकर; **चाहि निषेधिते**—ऐसा करने से; **तोमा-सबार**—तुम सब; **सङ्ग-सुखे**—तुम लोगों की संगति अच्छी लगती है; **लोभ**—इच्छा; **बाड़े**—बढ़ती; **चित्ते**—मेरे मन में।

अनुवाद

"मैं तुम लोगों को ऐसा करने से मना कर देता, किन्तु मुझे तुम लोगों की संगति इतनी अच्छी लगती है कि तुम लोगों की संगति करने की मेरी इच्छा बढ़ती ही जाती है।

নিত্যানন্দে আজ্ঞা দিলুঁ গৌড়েতে রহিতে ।
আজ্ঞা লঙ্ঘি' আইলা, কি পারি বলিতে? ॥৬৯॥

नित्यानन्दे आज्ञा दिलुँ गौड़ेते रहिते ।
आज्ञा लङ्घि' आइला, कि पारि बलिते ? ॥ ६९ ॥

नित्यानन्दे—श्री नित्यानन्द प्रभु तक; **आज्ञा दिलुँ**—मैंने आदेश दिया; **गौड़ेते रहिते**—बंगाल में रहने का; **आज्ञा लङ्घि'**—मेरी आज्ञा का उल्लंघन करके; **आइला**—वे आये हैं; **कि**—क्या; **पारि बलिते**—मैं कह सकता हूँ।

अनुवाद

"मैंने श्री नित्यानन्द प्रभु को बंगाल न छोड़ने का आदेश दिया था, किन्तु वे आज्ञा का उल्लंघन करके मेरे दर्शनार्थ आये हैं। भला मैं क्या कह सकता हूँ?

আইলেন আচার্য-গোসাঞি মোরে কৃপা করি' ।
প্রেম-ঋণে বদ্ধ আমি, শুধিতে না পারি ॥৭০॥

आइलेन आचार्य-गोसाञि मोरे कृपा करि' ।
प्रेम-ऋणे बद्ध आमि, शुधिते ना पारि ॥ ७० ॥

आइलेन—आये हैं; **आचार्य-गोसाञि**—अद्वैत आचार्य; **मोरे**—मुझ पर; **कृपा करि'**—कृपा की; **प्रेम**—प्रेम का; **ऋणे**—ऋणी हूँ; **बद्ध आमि**—मैं बँधा हुआ हूँ; **शुधिते**—उऋण हो पाना; **ना पारि**—असम्भव है।

अनुवाद

"अद्वैत आचार्य भी मुझ पर अपनी अहैतुकी कृपा के कारण यहाँ आये हैं। मैं उनके स्नेहिल व्यवहार के लिए उनका ऋणी हूँ। मेरे लिए इस ऋण से उऋण हो पाना असम्भव है।

মোর লাগি' স্ত্রী-পুত্র গৃহাদি ছাড়িয়া ।
নানা দুর্গম পথ লঙ্ঘি' আইসেন ধাঞা ॥৭১॥

मोर लागि' स्त्री-पुत्र गृहादि छाड़िया ।
नाना दुर्गम पथ लङ्घि' आइसेन धाञा ॥ ७१ ॥

मोर लागि'—मेरे लिए; **स्त्री**—पत्नी; **पुत्र**—पुत्र; **गृह-आदि**—घर तथा परिवार आदि को; **छाड़िया**—छोड़कर; **नाना**—नाना; **दुर्गम**—अत्यन्त दुर्गम; **पथ**—रास्तों से; **लङ्घि'**—होकर; **आइसेन धाञा**—बड़ी शीघ्रता से यहाँ आते हैं।

अनुवाद

"सारे भक्त यहाँ मेरे लिए आते हैं। वे अपने घरों तथा परिवारों को छोड़कर यहाँ शीघ्र पहुँचने के लिए अत्यन्त दुर्गम रास्तों से होकर यात्रा करते हैं।

आमि एइ नीलाचले रहि ये वसिया ।
परिश्रम नाहि मोर तोमा सवार लागिया ॥७२॥

आमि एइ नीलाचले रहि ये वसिया ।
परिश्रम नाहि मोर तोमा सबार लागिया ॥७२॥

आमि—मैं; **एइ**—यहाँ; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी में; **रहि**—रहता; **ये वसिया**—जाता हूँ; **परिश्रम नाहि मोर**—थकावट या कष्ट नहीं होता; **तोमा सबार लागिया**—तुम सबों की कृपा है।

अनुवाद

"मुझको कोई थकावट या कष्ट नहीं होता, क्योंकि मैं तो यहाँ नीलाचल, जगन्नाथ पुरी में ही रहता हूँ और कहीं भी नहीं जाता। यह तो तुम सबों की कृपा है।

सन्न्यासी मानुष मोर, नाहि कोन धन ।
कि दिया तोमार ऋण करिमु शोधन? ॥७३॥

सन्न्यासी मानुष मोर, नाहि कोन धन ।
कि दिया तोमार ऋण करिमु शोधन? ॥७३॥

सन्न्यासी मानुष—संन्यास आश्रम में; **मोर**—मेरे पास; **नाहि**—नहीं; **कोन**—कोई; **धन**—धन; **कि**—क्या; **दिया**—दिया; **तोमार ऋण**—तुम सब का; **करिमु शोधन**—कैसे चुका सकता हूँ।

अनुवाद

"मैं संन्यासी हूँ और मेरे पास धन नहीं है। भला तुमने मुझ पर जो कृपा दिखलाई है, उसका ऋण मैं कैसे चुकता कर सकता हूँ?

দেহ-মাত্র ধন তোমায় কৈলুঁ সমর্পণ ।
তাহাঁ বিকাইে, যাহাঁ বেচিতে তোমার মন'' ॥৭৪॥

দেহ-মাত্র ধন তোমায় কৈলুঁ সমর্পণ ।
তাহাঁ বিকাই, যাহাঁ বেচিতে তোমার মন" ॥৭৪॥

দেহ—शरीर; **মাত্র**—केवल; **ধন**—धन; **তোমায়**—तुम्हारे पर; **কৈলুঁ সমর্পণ**—मैं समर्पित करता हूँ; **তাহাঁ**—वहाँ; **বিকাই**—मैं बेचता; **যাহাঁ**—कहाँ; **বেচিতে**—बेच सकते; **তোমার মন**—तुम्हारा मन।

अनुवाद

"मेरे पास केवल यह शरीर है, अतएव मैं इसे तुम्हें समर्पित करता हूँ। अब तुम चाहो, तो इसे कहीं भी बेच सकते हो। यह तुम्हारी सम्पत्ति है।"

প্রভুর বচনে সবার দ্রবী-ভূত মন ।
অঝোর-নয়নে সবে করেন ক্রন্দন ॥৭৫॥

প্রভুর বচনে সবার দ্রবী-ভূত মন ।
অঝোর-নয়নে সবে করেন ক্রন্দন ॥৭৫॥

প্রভুর—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **বচনে**—शब्दों से; **সবার**—सब का; **দ্রবী-ভূত**—द्रवीभूत हो गया; **মন**—मन; **অঝোর**—अश्रु बहाने लगी; **নয়নে**—आँखे; **সবে**—सब की; **করেন ক্রন্দন**—रोने लगे।

अनुवाद

जब सारे भक्तों ने श्री चैतन्य महाप्रभु के इन मधुर वचनों को सुना, तो उनके हृदय द्रवित हो उठे और वे लगातार अश्रु बहाने लगे।

প্রভু সবার গলা ধরি' করেন রোদন ।
কান্দিতে কান্দিতে সবায় কৈলা আলিঙ্গন ॥৭৬॥

প্রভু সবার গলা ধরি' করেন রোদন ।
কান্দিতে কান্দিতে সবায় কৈলা আলিঙ্গন ॥৭৬॥

প্রভু—श्री चैतन्य महाप्रभु; **সবার**—सभी को; **গলা**—गले से; **ধরি'**—लगाकर; **করেন রোদন**—रोना शुरू किया; **কান্দিতে কান্দিতে**—रोने लगे; **সবায়**—उन सबों का; **কৈলা আলিঙ্গন**—आलिंगन किया।

अनुवाद

अपने भक्तों को पकड़कर महाप्रभु ने सबों का आलिंगन किया और स्वयं रोने लगे।

সবাই রহিল, কেহ চলিতে নারিল ।
আর দিন পাঁচ-সাত এই-মতে গেল ॥৭৭॥

সবাइ রহিল, কেহ চলিতে নারিল ।
আর দিন পাঁচ-সাত এइ-মতে গেল ॥৭৭॥

सबाइ रहिल—सभी रहे; **केह चलिते नारिल**—कोई भी न छोड़ पाये; **आर**—और; **दिन पाँच-सात**—पाँच सात दिन; **एइ-मते**—इस प्रकार; **गेल**—व्यतीत हुए।

अनुवाद

उन्हें न छोड़ पाने के कारण वे सभी वहीं रहे और इस तरह पाँच-सात दिन और बीत गये।

অদ্বৈত অবধূত কিছু কহে প্রভু-পায় ।
"সহজে তোমার গুণে জগদ্বিকায় ॥৭৮॥

অদ্বৈত অবধূত কিছু কহে প্রভু-পায় ।
"সহজে তোমার গুণে জগত্ বিকায় ॥৭৮॥

অদ্বৈত—अद्वैत प्रभु; **अवधूत**—नित्यानन्द प्रभु; **किछु**—कुछ; **कहे**—कहा; **प्रभु-पाय**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों पर; **सहजे**—सहज रूप से; **तोमार**—आपके; **गुणे**—दिव्य गुणों के कारण; **जगत् विकाय**—सारा जगत् आपके प्रति कृतज्ञ है।

अनुवाद

अद्वैत प्रभु तथा नित्यानन्द प्रभु ने महाप्रभु के चरणकमलों में ये शब्द निवेदित किये, "आपके दिव्य गुणों के कारण सारा जगत् सहज रूप से आपके प्रति कृतज्ञ है।

আবার তাতে বান্ধ'—ঐছে কৃপা-বাক্য-ডোরে ।
তোমা ছাড়ি' কেবা কাহাঁ যাইবারে পারে?" ॥৭৯॥

आबार ताते बान्ध'—ऐछे कृपा-वाक्य-डोरे ।
तोमा छाड़ि' केबा काहाँ याइबारे पारे?" ॥ ७९ ॥

आबार—फिर से; **ताते**—तो भी; **बान्ध'**—आप बाँधते हैं; **ऐछे**—ऐसे; **कृपा**—दयापूर्ण; **वाक्य**—शब्दों से; **डोरे**—डोरी से; **तोमा छाड़ि'**—आपको छोड़कर; **केबा**—कौन; **काहाँ**—कहाँ भी; **याइबारे पारे**—जा सकता है।

अनुवाद

"फिर भी आप अपने मधुर वचनों से अपने भक्तों को फिर से बाँध लेते हैं। ऐसी अवस्था में कौन कहीं भी जा सकता है?"

तबे प्रभु सबाकारे प्रबोध करिया ।
सबारे विदाय दिला सुस्थिर हञा ॥ ८० ॥

तबे—तब; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सबाकारे**—उन सब को; **प्रबोध करिया**—शान्त किया; **सबारे**—हर एक को; **विदाय दिला**—विदा कराया; **सु-स्थिर हञा**—शान्त परिस्थिति में।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन सबों को शान्त किया और हर एक को विदा किया।

नित्यानन्दे कहिला—"तुमि ना आसिह बार-बार ।
तथाइ आमार सङ्ग ह-इबे तोमार" ॥ ८१ ॥

नित्यानन्दे—नित्यानन्द प्रभु से; **कहिला**—कहा; **तुमि**—आप; **ना आसिह**—नहीं आना चाहिए; **बार-बार**—बारम्बार; **तथाइ**—वहाँ (बंगाल में); **आमार**—मेरा; **सङ्ग**—संग; **ह-इबे**—प्राप्त होगा; **तोमार**—आपको।

अनुवाद

महाप्रभु ने नित्यानन्द प्रभु से विशेष अनुरोध किया, "आपको यहाँ पर बारम्बार नहीं आना चाहिए। बंगाल में आपको मेरा संग प्राप्त होगा।"

চলে সব ভক্ত-গণ রোদন করিয়া ।
মহাপ্রভু রহিলা ঘরে বিষণ্ণ হঞা ॥ ৮২ ॥

चले सब भक्त-गण रोदन करिया ।
महाप्रभु रहिला घरे विषण्ण हञा ॥ ८२ ॥

चले—शुरू की; **सब**—सभी; **भक्त-गण**—भक्तगण; **रोदन करिया**—रोना शुरू किया; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **रहिला**—रहे; **घरे**—अपने आवास में; **विषण्ण हञा**—अत्यन्त खिन्न होकर।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्तों ने रोते-रोते यात्रा शुरू की, जबकि महाप्रभु अपने आवास में खिन्न होकर रहे।

নিজ-কৃপা-গুণে প্রভু বান্ধিলা সবারে ।
মহাপ্রভুর কৃপা-ঋণ কে শোধিতে পারে? ॥ ৮৩ ॥

निज-कृपा-गुणे प्रभु बान्धिला सबारे ।
महाप्रभुर कृपा-ऋण के शोधिते पारे? ॥ ८३ ॥

निज—अपनी; **कृपा-गुणे**—दिव्य कृपा से; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **बान्धिला**—बाँध लिया; **सबारे**—हर एक को; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **कृपा-ऋण**—कृपा के ऋण को; **के**—कौन; **शोधिते पारे**—चुका सकता है।

अनुवाद

महाप्रभु ने अपनी दिव्य कृपा से हर एक को बाँध लिया। श्री चैतन्य महाप्रभु की इस कृपा के ऋण को कौन चुका सकता है?

যারে যৈছে নাচায় প্রভু স্বতন্ত্র ঈশ্বর ।
তাতে তাঁরে ছাড়ি' লোক যায় দেশান্তর ॥ ৮৪ ॥

য়ারে য়ৈছে নাচায় প্রভু স্বতন্ত্র ঈশ্বর ।
তাতে তাঁরে ছাড়ি' লোক য়ায় দেশান্তর ॥ ८४ ॥

য়ারে—जिस किसी को; **য়ৈছে**—जैसे; **নাচায়**—नचाते हैं; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **স্বতন্ত্র ঈশ্বর**—स्वतन्त्र परमेश्वर; **তাতে**—इसलिए; **তাঁরে**—उनको; **ছাড়ি'**—छोड़कर; **লোক**—लोग; **য়ায়**—गये; **দেশ-অন্তর**—देश के अलग अलग भागों में।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु पूर्णरूपेण स्वतन्त्र परमेश्वर हैं। वे हर एक को अपनी इच्छानुसार नचाते हैं। इसलिए सारे भक्त उनका साथ छोड़कर देश के विभिन्न भागों में अपने-अपने घर लौट गये।

কাষ্ঠের পুতলী যেন কুহকে নাচায় ।
ঈশ্বর-চরিত্র কিছু বুঝন না যায় ॥ ৮৫ ॥

কাষ্ঠের পুতলী য়েন কুহকে নাচায় ।
ঈশ্বর-চরিত্র কিছু বুঝন না য়ায় ॥ ৮৫ ॥

কাষ্ঠের—(কাঠ) লকডে সে বনী; **পুতলী**—পুতলী; **য়েন**—জৈসে; **কুহকে**—জাদূগার কে; **নাচায়**—ইচ্ছানুসার নাচতী হৈ; **ঈশ্বর-চরিত্র**—পূর্ণ পুরুষোত্তম ভগবান্ কে চরিত্র; **কিছু বুঝন না য়ায়**—কো কৌন সমঝ সকতা হৈ।

অনুবাদ

জিস তরহ কাঠ কী পুতলী নচানে বালে কী ইচ্ছানুসার নাচতী হৈ, উসী তরহ হর কার্য ভগবান্ কী ইচ্ছা সে সম্পন্ন হোতা হৈ। ভলা পূর্ণ পুরুষোত্তম ভগবান্ কে চরিত্র কো কৌন সমঝ সকতা হৈ?

পূর্ব-বর্ষে জগদানন্দ 'আই' দেখিবারে ।
প্রভু-আজ্ঞা লঞা আইলা নদীয়া-নগরে ॥ ৮৬ ॥

পূর্ব-বর্ষে জগদানন্দ 'আই' দেখিবারে ।
প্রভু-আজ্ঞা লঞা আইলা নদীয়া-নগরে ॥ ৮৬ ॥

পূর্ব-বর্ষে—পিছলে বর্ষ; **জগদানন্দ**—জগদানন্দ পণ্ডিত; **আই**—শচীমাতা; **দেখিবারে**—কো দেখনে; **প্রভু-আজ্ঞা লঞা**—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু কে আদেশ কা পালন করতে হুএ; **আইলা**—আয়ে; **নদীয়া-নগরে**—নদিয়া শহর।

অনুবাদ

পিছলে বর্ষ মহাপ্রভু কে আদেশ কা পালন করতে হুএ জগদানন্দ পণ্ডিত শচীমাতা কো মিলনে নদিয়া শহর লৌট আয়ে থে।

আইর চরণ যাই' করিলা বন্দন ।
জগন্নাথের বস্ত্র-প্রসাদ কৈলা নিবেদন ॥ ৮৭॥

আইর চরণ য়াই' করিলা বন্দন ।
জগন্নাথের বস্ত্র-প্রসাদ কৈলা নিবেদন ॥ ৮৭॥

আইর—शचीमाता के; **চরণ**—चरणकमलों की; **য়াই'**—जाकर; **করিলা বন্দন**—वन्दना की; **জগন্নাথের**—भगवान् जगन्नाथ के; **বস্ত্র-প্রসাদ**—वस्त्र और प्रसाद; **কৈলা নিবেদন**—दिया।

अनुवाद

जब वे आये, तो उन्होंने उनके चरणकमलों की वन्दना की और तब उन्हें जगन्नाथजी के वस्त्र तथा प्रसाद दिये।

প্রভুর নামে মাতারে দণ্ডবৎকৈলা ।
প্রভুর বিনতি-স্তুতি মাতারে কহিলা ॥ ৮৮॥

প্রভুর নামে মাতারে দণ্ডবৎ কৈলা ।
প্রভুর বিনতি-স্তুতি মাতারে কহিলা ॥ ৮৮॥

প্রভুর নামে—श्री चैतन्य महाप्रभु के नाम से; **মাতারে**—उनकी माता को; **দণ্ডবৎ কৈলা**—दण्डवत् प्रणाम किया; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **বিনতি-স্তুতি**—विनती तथा प्रार्थना; **মাতারে**—उनकी माता को; **কহিলা**—कही।

अनुवाद

उन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु की ओर से शचीमाता को नमस्कार किया और उनसे भगवान् चैतन्य महाप्रभु की सारी विनती तथा प्रार्थना कही।

জগদানন্দে পাঞা মাতা আনন্দিত মনে ।
তেঁহো প্রভুর কথা কহে, শুনে রাত্রি-দিনে ॥ ৮৯॥

জগদানন্দে পাঞা মাতা আনন্দিত মনে ।
তেঁহো প্রভুর কথা কহে, শুনে রাত্রি-দিনে ॥ ৮৯॥

জগদানন্দে—जगदानन्द; **পাঞা**—हो गईं; **মাতা**—शचीमाता; **আনন্দিত মনে**—मन से आनन्दित; **তেঁহো**—वह; **প্রভুর কথা**—श्री चैतन्य महाप्रभु के विषय में; **কহে**—कहा; **শুনে**—सुना; **রাত্রি-দিনে**—रात और दिन।

अनुवाद

जगदानन्द के आने से शचीमाता अत्यधिक आनन्दित हुईं। जब वे चैतन्य महाप्रभु के विषय में बतलाते, तो वे रात-दिन सुनतीं।

জগদানন্দ কহে,—"মাতা, কোন কোন দিনে ।
তোমার এথা আসি' প্রভু করেন ভোজনে ॥৯০॥

जगदानन्द कहे,—"माता, कोन कोन दिने ।
तोमार एथा आसि' प्रभु करेन भोजने ॥ ९० ॥

जगदानन्द कहे—जगदानन्द ने कहा; **माता**—हे माता; **कोन कोन दिने**—कभी-कभी; **तोमार एथा आसि'**—यहाँ आते हैं; **प्रभु**—प्रभु; **करेन भोजने**—भोजन करते हैं।

अनुवाद

जगदानन्द पण्डित ने कहा, "हे माता, कभी-कभी महाप्रभु यहाँ आते हैं और आप जो भोजन देती हैं, उसे पूरा खा जाते हैं।

ভোজন করিয়া কহে আনন্দিত হঞা ।
মাতা আজি খাওয়াইলা আকণ্ঠ পূরিয়া ॥৯১॥

भोजन करिया कहे आनन्दित हञा ।
माता आजि खाओयाइला आकण्ठ पूरिया ॥ ९१ ॥

भोजन करिया—भोजन करने के बाद; **कहे**—कहते हैं; **आनन्दित हञा**—अत्यन्त आनन्दित होकर; **माता**—माता; **आजि**—आज; **खाओयाइला**—खिलाया; **आकण्ठ**—गले तक; **पूरिया**—भरकर।

अनुवाद

"भोजन करने के बाद महाप्रभु कहते हैं, 'आज मेरी माता ने मुझे गले तक भरकर खिला दिया है।

আমি যাই' ভোজন করি—মাতা নাহি জানে ।
সাক্ষাতে খাই আমি' তেঁহো 'স্বপ্ন' হেন মানে" ॥৯২॥

आमि याइ' भोजन करि—माता नाहि जाने ।
साक्षाते खाइ आमि' तेंहो 'स्वप्न' हेन माने" ॥ ९२ ॥

आमि—मैं; **याइ'**—जाता हूँ; **भोजन करि**—भोजन देती है; **माता**—माता; **नाहि जाने**—नहीं समझ पातीं; **साक्षाते**—प्रत्यक्ष; **खाइ आमि'**—मैं खा रहा हूँ; **तेंहो**—वे; **स्वप्न**—सपना; **हेन**—जब; **माने**—सोचती हैं।

अनुवाद

"'मैं वहाँ जाता हूँ और मेरी माता जो भोजन देती हैं उसे खाता हूँ, किन्तु वे यह समझ नहीं पातीं कि मैं प्रत्यक्ष रूप से खा रहा हूँ। वे सोचती हैं कि यह सपना है।'"

माता कहे,—"कत राञ्धि उत्तम व्यञ्जन ।
निमाञि इहाँ खाय,—इच्छा हय मोर मन ॥ ९३ ॥

माता कहे—माता ने कहा; **कत**—कभी भी; **रान्धि**—मैंने पकाई हुई; **उत्तम व्यञ्जन**—सुन्दर सब्जियाँ; **निमाञि**—निमाइ; **इहाँ**—यहाँ; **खाय**—खाये; **इच्छा**—इच्छा; **हय**—है; **मोर मन**—मेरा मन।

अनुवाद

शचीमाता ने कहा, "मैं चाहती हूँ कि निमाइ मेरे द्वारा पकाई सारी सुन्दर सब्जियाँ खाये। यही मेरी इच्छा है।

निमाञि खाञाछे,—ऐछे हय मोर मन ।
पाछे ज्ञान हय,—मुञि देखिनु 'स्वपन'" ॥ ९४ ॥

निमाञि खाञाछे—निमाई उन्हें खा चुका है; **ऐछे**—ऐसा; **हय**—है; **मोर**—मेरा; **मन**—मन; **पाछे**—बाद में; **ज्ञान हय**—मैं सोचती हूँ; **मुञि**—मैं; **देखिनु स्वपन**—सपना देख रही थी।

अनुवाद

"मैं कभी-कभी सोचती हूँ कि निमाइ उन्हें खा चुका है, किन्तु बाद में सोचती हूँ कि मैं तो केवल सपना देख रही थी।"

এই-মত জগদানন্দ শচীমাতা-সনে ।
চৈতন্যের সুখ-কথা কহে রাত্রি-দিনে ॥৯৫॥

এই-মত জগদানন্দ শচীমাতা-সনে ।
চৈতন্যের সুখ-কথা কহে রাত্রি-দিনে ॥ ৯৫ ॥

এই-মত—इस तरह; **জগদানন্দ**—जगदानन्द पण्डित; **শচীমাতা-সনে**—शचीमाता के साथ; **চৈতন্যের**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **সুখ-কথা**—सुख के विषय में; **কহে**—कहते; **রাত্রি-দিনে**—रात और दिन।

अनुवाद

इस तरह जगदानन्द पण्डित तथा शचीमाता रात-दिन श्री चैतन्य महाप्रभु के सुख के विषय में बातें करते।

নদীয়ার ভক্ত-গণে সবারে মিলিলা ।
জগদানন্দে পাঞা সবে আনন্দিত হৈলা ॥৯৬॥

নদীয়ার ভক্ত-গণে সবারে মিলিলা ।
জগদানন্দে পাঞা সবে আনন্দিত হৈলা ॥ ৯৬ ॥

নদীয়ার—नदिया में, नवद्वीप; **ভক্ত-গণে**—भक्तों से; **সবারে**—सारे; **মিলিলা**—मिले; **জগদানন্দে**—जगदानन्द; **পাঞা**—पाकर; **সবে**—हर एक; **আনন্দিত হৈলা**—आनन्दित हुए।

अनुवाद

जगदानन्द पण्डित नदिया में अन्य सारे भक्तों से मिले। भक्त उन्हें वहाँ उपस्थित पाकर अत्यन्त आनन्दित हुए।

আচার্য মিলিতে তবে গেলা জগদানন্দ ।
জগদানন্দে পাঞা হৈল আচার্য আনন্দ ॥৯৭॥

আচার্য্য মিলিতে তবে গেলা জগদানন্দ ।
জগদানন্দে পাঞা হৈল আচার্য্য আনন্দ ॥ ৯৭ ॥

আচার্য্য মিলিতে—अद्वैत आचार्य से मिलने; **তবে**—इसके बाद; **গেলা**—गये; **জগদানন্দ**—जगदानन्द; **জগদানন্দে পাঞা**—जगदानन्द को पाकर; **হৈল**—हुए; **আচার্য্য**—अद्वैत आचार्य; **আনন্দ**—अत्यन्त आनन्दित।

अनुवाद

इसके बाद जगदानन्द पण्डित अद्वैत आचार्य से मिलने गये। वे भी उनसे मिलकर अत्यन्त आनन्दित हुए।

वासुदेव, मुरारि-गुप्त जगदानन्दे पाञा ।
आनन्दे राखिला घरे, ना देन छाड़िया ॥९८॥

वासुदेव, मुरारि-गुप्त जगदानन्दे पाञा ।
आनन्दे राखिला घरे, ना देन छाड़िया ॥ ९८ ॥

वासुदेव—वासुदेव; **मुरारि-गुप्त**—मुरारि गुप्त; **जगदानन्दे पाञा**—जगदानन्द पण्डित को पाकर; **आनन्दे**—अत्यन्त प्रसन्न होकर; **राखिला**—रखा; **घरे**—घरों में; **ना देन छाड़िया**—उन्हें जाने नहीं दिया।

अनुवाद

वासुदेव दत्त तथा मुरारि गुप्त जगदानन्द पण्डित को मिलकर इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने उन्हें अपने घरों में रखा और उन्हें जाने नहीं दिया।

चैतन्येर मर्म-कथा शुने ताँर मुखे ।
आपना पासरे सबे चैतन्य-कथा-सुखे ॥९९॥

चैतन्येर मर्म-कथा शुने ताँर मुखे ।
आपना पासरे सबे चैतन्य-कथा-सुखे ॥ ९९ ॥

चैतन्येर—चैतन्य महाप्रभु की; **मर्म-कथा**—गोपनीय कथाएँ; **शुने**—वे सुनते; **ताँर मुखे**—उनके मुख से; **आपना पासरे**—अपने आपको भूल जाते; **सबे**—सब; **चैतन्य-कथा-सुखे**—चैतन्य महाप्रभु के विषय में सुनने के महा सुख में।

अनुवाद

उन्होंने जगदानन्द पण्डित के मुख से श्री चैतन्य महाप्रभु की गोपनीय कथाएँ सुनीं और महाप्रभु के विषय में सुनने के महा सुख में वे अपने आप को भूल गये।

जगदानन्द मिलिते याय येई भक्त-घरे ।
सेई सेई भक्त सुखे आपना पासरे ॥१००॥

जगदानन्द मिलिते याय येइ भक्त-घरे ।
सेइ सेइ भक्त सुखे आपना पासरे ॥ १०० ॥

जगदानन्द—जगदानन्द पण्डित; **मिलिते**—मिलने; **याय**—जाते; **येइ**—किसी; **भक्त-घरे**—भक्त के घर; **सेइ सेइ**—वह; **भक्त**—भक्त; **सुखे**—सुख में; **आपना पासरे**—अपने आपको भूल जाता।

अनुवाद

जब भी जगदानन्द पण्डित किसी भक्त के घर मिलने जाते, तो वह भक्त परम सुख में तुरन्त ही अपने आपको भूल जाता।

চৈতন্যের প্রেম-পাত্র জগদানন্দ ধন্য ।
যারে মিলে সেই মানে,—'পাইলুঁ চৈতন্য' ॥ ১০১ ॥

चैतन्येर प्रेम-पात्र जगदानन्द धन्य ।
यारे मिले सेइ माने,—'पाइलुँ चैतन्य' ॥ १०१ ॥

चैतन्येर—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **प्रेम-पात्र**—के प्रेमपात्र; **जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित; **धन्य**—धन्य; **यारे मिले**—वे जिनसे भी मिले; **सेइ माने**—वह सोचता है; **पाइलुँ चैतन्य**—मुझे श्री चैतन्य महाप्रभु की संगति मिल गई।

अनुवाद

जगदानन्द पंडित की जय हो! उन पर श्री चैतन्य महाप्रभु की इतनी कृपा है कि जो भी उनसे मिलता है, वह सोचता है, "अब मुझे साक्षात् श्री चैतन्य महाप्रभु की संगति मिल गई है।"

শিবানন্দ-সেন-গৃহে যাঞা রহিলা ।
'চন্দনাদি' তৈল তাহাঁ এক-মাত্রা কৈলা ॥ ১০২ ॥

शिवानन्द-सेन-गृहे याञा रहिला ।
'चन्दनादि' तैल ताहाँ एक-मात्रा कैला ॥ १०२ ॥

शिवानन्द-सेन-गृहे—शिवानन्द सेन के घर; **याञा**—जाकर; **रहिला**—रहे; **चन्दन-आदि तैल**—सुगन्धित चन्दन का तेल; **ताहाँ**—वहाँ; **एक-मात्रा**—एक मात्रा (सोलह सेर, या पन्द्रह किलोग्राम के नजीक); **कैला**—किया।

अनुवाद

जगदानन्द पण्डित कुछ काल के लिए शिवानन्द सेन के घर में रहे। तभी उन दोनों ने लगभग सोलह सेर चन्दन का सुगन्धित तेल तैयार किया।

সুগন্ধি করিয়া তৈল গাগরী ভরিয়া ।
নীলাচলে লঞা আইলা যতন করিয়া ॥ ১০৩ ॥

सुगन्धि करिया तैल गागरी भरिया ।
नीलाचले लञा आइला यतन करिया ॥ १०३ ॥

सु-गन्धि करिया—सुगन्धित किया; **तैल**—तेल; **गागरी**—बड़ा घड़ा; **भरिया**—भर दिया; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी को; **लञा**—लेकर; **आइला**—आये; **यतन करिया**—बड़े यत्न से।

अनुवाद

उन्होंने सुगन्धित तेल से एक मिट्टी का बड़ा घड़ा भरा और जगदानन्द पण्डित बड़े यत्न से उसे नीलाचल, जगन्नाथ पुरी ले आये।

গোবিন্দের ঠাঞি তৈল ধরিয়া রাখিলা ।
''প্রভু-অঙ্গে দিহ' তৈল'' গোবিন্দে কহিলা ॥ ১০৪ ॥

गोविन्देर ठाञि तैल धरिया राखिला ।
"प्रभु-अङ्गे दिह' तैल" गोविन्दे कहिला ॥ १०४ ॥

गोविन्देर ठाञि—गोविन्द की निगरानी में; **तैल**—तेल; **धरिया राखिला**—रख दिया गया; **प्रभु-अङ्गे**—श्री चैतन्य महाप्रभु की शरीर पर; **दिह'**—मल दिया करना; **तैल**—तेल; **गोविन्दे कहिला**—उन्होंने गोविन्द से कहा।

अनुवाद

इस तेल को गोविन्द की निगरानी में रख दिया गया और जगदानन्द ने उससे अनुरोध किया, "इस तेल को महाप्रभु के शरीर में मल दिया करना।"

তবে প্রভু-ঠাঞি গোবিন্দ কৈল নিবেদন ।
'জগদানন্দ চন্দনাদি-তৈল আনিয়াছেন ॥ ১০৫ ॥

तबे प्रभु-ठाञि गोविन्द कैल निवेदन ।
'जगदानन्द चन्दनादि-तैल आनियाछेन ॥ १०५॥

तबे—तब; **प्रभु-ठाञि**—बाद में श्री चैतन्य महाप्रभु से; **गोविन्द**—गोविन्द ने; **कैल निवेदन**—निवेदन किया; **जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित; **चन्दन-आदि-तैल**—सुगन्धित चन्दन तेल; **आनियाछेन**—लाये हैं।

अनुवाद

इसलिए गोविन्द ने श्री चैतन्य महाप्रभु से कहा, "जगदानन्द पण्डित कुछ सुगन्धित चन्दन का तेल लाये हैं।

তাঁর ইচ্ছা,—প্রভু অল্প মস্তকে লাগায় ।
পিত্ত-বায়ু-ব্যাধি-প্রকোপ শান্ত হঞা যায় ॥ ১০৬॥
তাঁর ইচ্ছা,—প্রভু অল্প মস্তকে লাগায় ।
পিত্ত-বায়ু-ব্যাধি-প্রকোপ শান্ত হঞা যায় ॥ ১০৬॥

তাঁর ইচ্ছা—उनकी इच्छा; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **अल्प**—थोड़ासा; **मस्तके लागाय**—सिर पर; **पित्त-वायु-व्याधि**—पित्त तथा वायु के कारण; **प्रकोप**—रक्त चाप; **शान्त हञा याय**—कम हो जायेगा।

अनुवाद

"यह उनकी इच्छा है कि आप अपने सिर पर थोड़ा-सा तेल लगाएँ। इससे पित्त तथा वायु के कारण जो रक्त चाप है, वह काफी कम हो जायेगा।

এক-কলস সুগন্ধি তৈল গৌড়েতে করিয়া ।
ইহাঁ আনিয়াছে বহু যতন করিয়া'' ॥ ১০৭॥
এক-কলস সুগন্ধি তৈল গৌড়েতে করিয়া ।
ইহাঁ আনিয়াছে বহু যতন করিয়া" ॥ ১০৭॥

এক-কলস—एक बड़ा घड़ा; **সু-গন্ধি তৈল**—सुगन्धित तेल; **গৌড়েতে করিয়া**—बंगाल में तैयार किया; **ইহাঁ**—यहाँ; **আনিয়াছে**—ले आये हैं; **বহু যতন করিয়া**—बड़े यत्न से।

अनुवाद

"उन्होंने बंगाल में एक बड़ा घड़ा तेल तैयार किया है और इसे वे बड़े यत्न से यहाँ ले आये हैं।"

प्रभु कहे,—"सन्न्यासीर नाहि तैले अधिकार ।
ताहाते सुगन्धि तैल,—परम धिक्कार! ॥ १०८॥

प्रभु कहे,—"सन्न्यासीर नाहि तैले अधिकार ।
ताहाते सुगन्धि तैल,—परम धिक्कार! ॥ १०८॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया; **सन्न्यासीर**—संन्यासी को; **नाहि**—नहीं; **तैले**—तेल से; **अधिकार**—प्रयोजन; **ताहाते**—विशेषतया; **सु-गन्धि तैल**—सुगन्धित तेल से; **परम धिक्-कार**—तुरन्त अस्वीकृत किया।

अनुवाद

महाप्रभु ने उत्तर दिया, "संन्यासी को तेल से, वह भी विशेषतया इस प्रकार के सुगन्धित तेल से, कोई प्रयोजन नहीं होता। इसे तुरन्त यहाँ से ले जाओ।

तात्पर्य

स्मार्त विधि-विधानों के प्रतिनिधि रघुनन्दन भट्टाचार्य के अनुसार :

प्रातः स्नाने व्रते श्राद्धे द्वादश्यां ग्रहणे तथा।
मद्यलेपसमं तैलं तस्मात् तैलं विवर्जयेत्॥

"जिसने व्रत ले रखा हो यदि वह प्रातःकाल स्नान के समय, श्राद्ध आदि अनुष्ठान सम्पन्न करते समय या द्वादशी के दिन अपने शरीर में तेल का मर्दन करता है, तो मानो वह अपने शरीर पर शराब डालता है। अतएव तैल का निषेध है।" *व्रत* से कभी-कभी *संन्यास व्रत* को सूचित किया जाता है। रघुनन्दन भट्टाचार्य ने अपनी पुस्तक *तिथितत्त्व* में यह भी कहा है :

गृहीतं च सार्षपं तैलं यत्तैलं पुष्पवासितम्।
अदुष्टं पक्वतैलं च तैलाभ्यंगे च नित्यशः॥

इसका अर्थ यह है कि घी, सरसों का तेल, पुष्प तेल तथा पकाये हुए तेल का प्रयोग केवल गृहस्थ ही करें।

জগন্নাথে দেহ' তৈল,—দীপ যেন জ্বলে ।
তার পরিশ্রম হৈব পরম-সফলে'' ॥ ১০৯॥

জগন্নাথে দেহ' তৈল,—দীপ য়েন জ্বলে ।
তার পরিশ্রম হৈব পরম-সফলে" ॥ ১০৯ ॥

জগন্নাথে—भगवान् जगन्नाथ को; **देह'**—दे दो; **तैल**—तेल; **दीप**—दीपक; **य़ेन**—इसे; **ज्वले**—जलाये जा सकें; **तार परिश्रम**—उनका परिश्रम; **हैब**—हो जायेगा; **परम-सफले**—पूरी तरह सफल।

अनुवाद

"यह तेल जगन्नाथ मन्दिर में दे दो, जहाँ इसे दीपकों में जलाया जा सके। इस तरह से तेल बनाने का जगदानन्द का परिश्रम पूरी तरह सफल हो जायेगा।"

এই কথা গোবিন্দ জগদানন্দেরে কহিল ।
মৌন করি' রহিল পণ্ডিত, কিছু না কহিল ॥ ১১০॥

एइ कथा गोविन्द जगदानन्देरे कहिल ।
मौन करि' रहिल पण्डित, किछु ना कहिल ॥ ११०॥

एइ कथा—यह समाचार; **गोविन्द**—गोविन्द; **जगदानन्देरे कहिल**—जगदानन्द को कहा; **मौन करि'**—मौन; **रहिल**—रह गये; **पण्डित**—जगदानन्द पण्डित; **किछु**—कुछ भी; **ना कहिल**—नहीं बोले।

अनुवाद

जब गोविन्द ने यह समाचार जगदानन्द पण्डित से कहा, तो जगदानन्द मौन रह गये तथा एक शब्द भी नहीं बोले।

দিন দশ গেলে গোবিন্দ জানাইল আর-বার ।
পণ্ডিতের ইচ্ছা,—'তৈল প্রভু করে অঙ্গীকার' ॥ ১১১॥

दिन दश गेले गोविन्द जानाइल आर-बार ।
पण्डितेर इच्छा,—'तैल प्रभु करे अङ्गीकार' ॥ १११ ॥

दिन दश गेले—दस दिन बीत गये; **गोविन्द**—गोविन्द; **जानाइल**—बताया; **आर-**

बार—पुनः; **पण्डितेर इच्छा**—जगदानन्द पण्डित की इच्छा; **तैल**—तेल; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करे अङ्गीकार**—स्वीकार करें।

अनुवाद

जब दस दिन बीत गये, तो गोविन्द ने पुनः श्री चैतन्य महाप्रभु से कहा, "जगदानन्द पण्डित की इच्छा है कि आप तेल स्वीकार कर लें।"

শুনি' প্রভু কহে কিছু সক্রোধ বচন ।
মর্দনিয়া এক রাখ করিতে মর্দন! ॥১১২॥

शुनि' प्रभु कहे किछु सक्रोध वचन ।
मर्दनिया एक राख करिते मर्दन! ॥११२॥

शुनि'—सुनकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कहे**—कहा; **किछु**—कुछ; **स-क्रोध वचन**—क्रोध में आकर; **मर्दनिया**—मालिश करनेवाला; **एक**—एक; **राख**—रख लो; **करिते मर्दन**—मालिश किया करे।

अनुवाद

जब महाप्रभु ने यह सुना, तो उन्होंने क्रोध में आकर कहा, "तो एक तेल मालिश करने वाला भी क्यों नहीं रख लेते, जो मेरी मालिश किया करे?

এই সুখ লাগি' আমি করিলুঁ সন্ন্যাস! ।
আমার 'সর্ব-নাশ'—তোমা-সবার 'পরিহাস' ॥১১৩॥

एइ सुख लागि' आमि करिलुँ सन्यास! ।
आमार 'सर्व-नाश'—तोमा-सबार 'परिहास' ॥११३॥

एइ—ऐसे; **सुख**—सुख; **लागि'**—के लिए; **आमि**—मैंने; **करिलुँ सन्यास**—संन्यास लिया है; **आमार सर्व-नाश**—मेरा सर्वनाश; **तोमा-सबार**—तुम सभी; **परिहास**—हँसोगे।

अनुवाद

"क्या मैंने ऐसे सुख के लिए संन्यास लिया है? इस तेल को स्वीकार करने से मेरा सर्वनाश हो जायेगा और तुम सभी हँसोगे।

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने आपको दृढ़ संन्यासी घोषित किया। संन्यासी

से किसी अन्य की सहायता लेने की आशा नहीं की जाती। अपनी मालिश के लिए मालिश करने वाला रखने का अर्थ होगा पराधीन रहना। श्री चैतन्य महाप्रभु अपने शारीरिक सुख के लिए किसी की भी सहायता न लेने के सिद्धान्त का दृढ़ता से पालन करना चाहते थे।

पथे याइते तैल-गन्ध मोर येइ पावे ।
'दारी सन्न्यासी' करि' आमारे कहिबे ॥ ११४॥

पथे याइते तैल-गन्ध मोर येइ पाबे ।
'दारी सन्न्यासी' करि' आमारे कहिबे ॥ ११४॥

पथे याइते—रास्ते से गुजरते हुए; **तैल-गन्ध**—तेल की गन्ध; **मोर**—मेरे; **येइ पाबे**—किसी ने भी सूँघा; **दारी सन्न्यासी**—ऐसा तान्त्रिक संन्यासी जो स्त्रियाँ रखता है; **करि'**—तब; **आमारे कहिबे**—मेरे बारे में कहेंगे।

अनुवाद

"यदि रास्ते से गुजरते हुए किसी व्यक्ति ने मेरे सिर के इस तेल को सूँघा, तो मुझे दारी संन्यासी (ऐसा तान्त्रिक संन्यासी जो स्त्रियाँ रखता है) सोचेगा।

शुनि प्रभुर वाक्य गोविन्द मौन करिला ।
प्रातः-काले जगदानन्द प्रभु-स्थाने आइला ॥ ११५॥

शुनि प्रभुर वाक्य गोविन्द मौन करिला ।
प्रातः-काले जगदानन्द प्रभु-स्थाने आइला ॥ ११५॥

शुनि—सुनकर; **प्रभुर वाक्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु के ये शब्द; **गोविन्द**—गोविन्द; **मौन करिला**—मौन रहा; **प्रातः-काले**—सबेरे; **जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित; **प्रभु-स्थाने**—श्री चैतन्य महाप्रभु के पास; **आइला**—आये।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के ये शब्द सुनकर गोविन्द मौन रहा। अगले दिन प्रातःकाल जगदानन्द, महाप्रभु से मिलने गये।

প্রভু কহে,—"পণ্ডিত, তৈল আনিলা গৌড় হ-ইতে ।
আমি ত' সন্ন্যাসী,—তৈল না পারি ল-ইতে ॥ ১১৬॥

प्रभु कहे,—"पण्डित, तैल आनिला गौड़ ह-इते ।
आमि त' सन्न्यासी,—तैल ना पारि ल-इते ॥ ११६॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **पण्डित**—हे पण्डित; **तैल**—तेल; **आनिला**—आपने लाया; **गौड़ ह-इते**—बंगाल से; **आमि**—मैं; **त'**—किन्तु; **सन्न्यासी**—संन्यासी; **तैल**—तेल; **ना पारि ल-इते**—मैं उसे स्वीकार नहीं कर सकता।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने जगदानन्द पण्डित से कहा, "हे पण्डित, आप मेरे लिए बंगाल से कुछ तेल लाये हैं, किन्तु संन्यासी होने के कारण मैं उसे स्वीकार नहीं कर सकता।

জগন্নাথে দেহ' লঞা দীপ যেন জ্বলে ।
তোমার সকল শ্রম হ-ইবে সফলে'' ॥ ১১৭॥

जगन्नाथे देह' लञा दीप येन ज्वले ।
तोमार सकल श्रम ह-इबे सफले" ॥ ११७॥

जगन्नाथे—भगवान् जगन्नाथ को; **देह'**—दे दो; **लञा**—लेकर; **दीप**—दीपकों; **येन**—जिससे; **ज्वले**—जलाने के लिए; **तोमार**—आपका; **सकल**—सब; **श्रम**—श्रम; **ह-इबे सफले**—सफल हो।

अनुवाद

"यह तेल जगन्नाथ मन्दिर में दे दीजिये, जिससे इसे दीपकों में जलाया जा सके। इस तरह तेल बनाने का आपका श्रम सफल हो जायेगा।"

পণ্ডিত কহে,—'কে তোমারে কহে মিথ্যা বাণী ।
আমি গৌড় হৈতে তৈল কভু নাহি আনি' ॥ ১১৮॥

पण्डित कहे,—'के तोमारे कहे मिथ्या वाणी ।
आमि गौड़ हैते तैल कभु नाहि आनि' ॥ ११८॥

पण्डित कहे—जगदानन्ड पण्डित ने कहा; **के**—कौन; **तोमारे**—आपसे; **कहे**—कहा;

मिथ्या वाणी—झूठी कहानियाँ; **आमि**—मैं; **गौड़ हैते**—बंगाल से; **तैल**—तेल; **कभु नाहि आनि**—नहीं लाया।

अनुवाद

जगदानन्द पण्डित ने कहा, "आपसे ये झूठी कहानियाँ कौन कहता है? मैं तो बंगाल से तेल कभी नहीं लाया।"

এত বলি' ঘর হৈতে তৈল-কলস লঞা ।
প্রভুর আগে আঙ্গিনাতে ফেলিলা ভাঙ্গিয়া ॥ ১১৯ ॥
एत बलि' घर हैते तैल-कलस लञा ।
प्रभुर आगे आङ्गिनाते फेलिला भाङ्गिया ॥ ११९ ॥

एत बलि'—यह कहकर; **घर हैते**—कमरे से; **तैल-कलस**—तेल का घड़ा; **लञा**—लेकर; **प्रभुर आगे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के सामने; **आङ्गिनाते**—आँगन में; **फेलिला**—फेंक दिया; **भाङ्गिया**—तोड ड़ाला।

अनुवाद

यह कहकर जगदानन्द पण्डित ने तेल का घड़ा कमरे से निकाला और श्री चैतन्य महाप्रभु के सामने इसे आँगन में फेंक दिया और तोड डाला।

তৈল ভাঙ্গি' সেই পথে নিজ-ঘর গিয়া ।
শুইয়া রহিলা ঘরে কপাট খিলিয়া ॥ ১২০ ॥
तैल भाङ्गि' सेइ पथे निज-घर गिया ।
शुइया रहिला घरे कपाट खिलिया ॥ १२० ॥

तैल भाङ्गि'—तेल का घड़ा तोड़ देने पर; **सेइ**—वे; **पथे**—मार्ग से; **निज-घर**—अपने घर; **गिया**—गये; **शुइया रहिला**—लेट गये; **घरे**—घर में; **कपाट**—दरवाजा; **खिलिया**—बन्द कर लिया।

अनुवाद

घड़ा तोड़ देने के बाद जगदानन्द पण्डित अपने घर लौट आये, भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया और लेट गये।

তৃতীয় দিবসে প্রভু তাঁর দ্বারে যাঞা ।
'উঠহ' পণ্ডিত'—করি' কহেন ডাকিয়া ॥ ১২১ ॥

तृतीय दिवसे प्रभु ताँर द्वारे ग्याञा ।
'उठह' पण्डित'—करि' कहेन डाकिया ॥ १२१ ॥

तृतीय दिवसे—तीन दिन बाद; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँर**—जगदानन्द पण्डित के; **द्वारे**—दरवाजे के पास; **ग्याञा**—गये; **उठह'**—कृपया उठो; **पण्डित**—हे जगदानन्द पण्डित; **करि'**—कहकर; **कहेन**—कहा; **डाकिया**—बुलाया।

अनुवाद

तीन दिन बाद श्री चैतन्य महाप्रभु उनके कमरे के दरवाजे के पास गये और कहा, "हे जगदानन्द पण्डित, कृपया उठो।

'আজি ভিক্ষা দিবা আমায় করিয়া রন্ধনে ।
মধ্যাহ্নে আসিব, এবে যাই দরশনে' ॥ ১২২ ॥

'आजि भिक्षा दिबा आमाय करिया रन्धने ।
मध्याह्ने आसिब, एबे ग्याइ दरशने' ॥ १२२ ॥

आजि—आज; **भिक्षा दिबा**—भोजन दे दो; **आमाय**—मेरे लिए; **करिया रन्धने**—पकाओ; **मध्याह्ने आसिब**—मैं दोपहर को लौटूँगा; **एबे**—अब; **ग्याइ दरशने**—मैं जगन्नाथ प्रभु के दर्शन करने जा रहा हूँ।

अनुवाद

"मैं चाहता हूँ कि आज आप स्वयं मेरे लिए दोपहर का भोजन बनायें। अभी मैं दर्शन करने मन्दिर जा रहा हूँ। मैं दोपहर को लौटूँगा।"

এত বলি' প্রভু গেলা, পণ্ডিত উঠিলা ।
স্নান করি' নানা ব্যঞ্জন রন্ধন করিলা ॥ ১২৩ ॥

एत बलि' प्रभु गेला, पण्डित उठिला ।
स्नान करि' नाना व्यञ्जन रन्धन करिला ॥ १२३ ॥

एत बलि'—यह कहकर; **प्रभु गेला**—श्री चैतन्य महाप्रभु चले गये; **पण्डित उठिला**—जगदानन्द पण्डित उठे; **स्नान करि'**—स्नान किया; **नाना**—विविध; **व्यञ्जन**—सब्जियाँ; **रन्धन करिला**—बनाने लगे।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु यह कहकर चले गये, तो जगदानन्द पण्डित अपने बिस्तर से उठे, स्नान किया और तरह-तरह की सब्जियाँ बनाने लगे।

मध्याह्न करिया प्रभु आइला भोजने ।
पाद प्रक्षालन करि' दिलेन आसने ॥ १२४॥

मध्याह्न करिया प्रभु आइला भोजने ।
पाद प्रक्षालन करि' दिलेन आसने ॥ १२४॥

मध्याह्न करिया—अपने दोपहर के कृत्य पूरे करके; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आइला**—आये; **भोजने**—भोजन करने; **पाद प्रक्षालन करि'**—अपने पाँव धोने के बाद; **दिलेन आसने**—बैठने के लिए आसन दिया।

अनुवाद

अपने दोपहर के कृत्य पूरे करके महाप्रभु भोजन करने आये। जगदानन्द पण्डित ने महाप्रभु के पाँव धोये और उन्हें बैठने के लिए आसन दिया।

सघृत शाल्यन्न कला-पाते स्तूप कैला ।
कलार डोङ्गा भरि' व्यञ्जन चौदिके धरिला ॥ १२५॥

सघृत शाल्यन्न कला-पाते स्तूप कैला ।
कलार डोङ्गा भरि' व्यञ्जन चौदिके धरिला ॥ १२५॥

स-घृत—घी डालकर; **शालि-अन्न**—महीन चावल; **कला-पाते**—केले के पत्ते पर; **स्तूप कैला**—ढेर बनाकर; **कलार डोङ्गा**—केले की छाल से बने दोने में; **भरि'**—भरकर; **व्यञ्जन**—सब्जियाँ; **चौ-दिके**—चारों ओर; **धरिला**—रख दी।

अनुवाद

उन्होंने घी डालकर महीन चावल पकाया था और उसे केले के पत्ते पर ऊँचाई तक ढेर बनाकर रख दिया था। साथ ही केले की छाल से बने दोने में तरह तरह की सब्जियाँ थीं, जिन्हें उन्होंने चारों ओर रख दिया था।

অন্ন-ব্যঞ্জনোপরি তুলসী-মঞ্জরী ।
জগন্নাথের পিঠা-পানা আগে আনে ধরি' ॥১২৬॥

अन्न-व्यञ्जनोपरि तुलसी-मञ्जरी ।
जगन्नाथेर पिठा-पाना आगे आने धरि' ॥ १२६ ॥

अन्न—चावल; **व्यञ्जन**—सब्जियाँ; **उपरि**—के ऊपर; **तुलसी-मञ्जरी**—तुलसी की मंजरियाँ; **जगन्नाथेर**—भगवान् जगन्नाथ का; **पिठा-पाना**—रोट और खीर; **आगे**—के सामने; **आने धरि'**—लाये।

अनुवाद

चावल तथा सब्जियों के ऊपर तुलसी की मंजरियाँ थीं और महाप्रभु के सामने रोट, खीर तथा जगन्नाथजी का अन्य प्रसाद था।

প্রভু কহে,—"দ্বিতীয়-পাতে বাড়' অন্ন-ব্যঞ্জন ।
তোমায় আমায় আজি একত্র করিব ভোজন ॥১২৭॥

प्रभु कहे,—"द्वितीय-पाते बाड़' अन्न-व्यञ्जन ।
तोमाय आमाय आजि एकत्र करिब भोजन ॥ १२७ ॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **द्वितीय-पाते**—दूसरा पत्तल; **बाड़'**—लाओ; **अन्न-व्यञ्जन**—चावल और सब्जियाँ; **तोमाय आमाय**—आप और मैं; **आजि**—आज; **एकत्र**—साथ साथ; **करिब भोजन**—भोजन करेंगे।

अनुवाद

महाप्रभु ने कहा, "एक दूसरा पत्तल बिछाकर उसमें चावल तथा सब्जियाँ रख लो, जिससे आज आप और मैं दोनों साथ-साथ भोजन करेंगे।"

হস্ত তুলি' রহেন প্রভু, না করেন ভোজন ।
তবে পণ্ডিত কহেন কিছু সপ্রেম বচন ॥১২৮॥

हस्त तुलि' रहेन प्रभु, ना करेन भोजन ।
तबे पण्डित कहेन किछु सप्रेम वचन ॥ १२८ ॥

हस्त तुलि'—हाथ ऊपर उठाये; **रहेन प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु रहे; **ना करेन भोजन**—

भोजन नहीं किया; **तबे**—तब तक; **पण्डित कहेन**—जगदानन्द ने कहा; **किछु**—कुछ; **स-प्रेम वचन**—स्नेह और प्रेम युक्त वचन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु अपना हाथ ऊपर उठाये रहे और उन्होंने तब तक भोजन नहीं किया, जब तक जगदानन्द पण्डित ने स्नेह और प्रेम युक्त निम्नलिखित वचन नहीं कहे।

"आपने प्रसाद लह, पाछे मुञि ल-इमु ।
तोमार आग्रह आमि केमने खण्डिमु?" ॥ १२९॥
"आपने प्रसाद लह, पाछे मुञि ल-इमु ।
तोमार आग्रह आमि केमने खण्डिमु?" ॥ १२९॥

आपने—आप; **प्रसाद लह**—प्रसाद ग्रहण करे; **पाछे**—बाद में; **मुञि ल-इमु**—मैं लूँगा; **तोमार**—आपका; **आग्रह**—आग्रह; **आमि**—मैं; **केमने**—कैसे; **खण्डिमु**—टालूँगा।

अनुवाद

"कृपया आप पहले प्रसाद ग्रहण करें। मैं बाद में खाऊँगा। मैं आपके आग्रह को नहीं टालूँगा।"

तबे महाप्रभु सुखे भोजने वसिला ।
व्यञ्जनेर स्वाद पाञा कहिते लागिला ॥ १३०॥
तबे महाप्रभु सुखे भोजने वसिला ।
व्यञ्जनेर स्वाद पाञा कहिते लागिला ॥ १३०॥

तबे—तब; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सुखे**—प्रसन्नतापूर्वक; **भोजने वसिला**—भोजन ग्रहण करने बैठे; **व्यञ्जनेर स्वाद**—सब्जियों का स्वाद; **पाञा**—ले चुके; **कहिते लागिला**—कहने लगे।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने प्रसन्नतापूर्वक भोजन ग्रहण किया। जब वे सब्जियों का स्वाद ले चुके, तो पुनः कहने लगे।

''क्रोधावेशेर पाकेर हय ऐछे स्वाद! ।
एई त' जानिये तोमाय कृष्णेर 'प्रसाद' ॥ १३१॥

"क्रोधावेशेर पाकेर हय ऐछे स्वाद! ।
एइ त' जानिये तोमाय कृष्णेर 'प्रसाद' ॥ १३१॥

क्रोध-आवेशेर—क्रोध में; **पाकेर**—पकाते; **हय**—हो; **ऐछे**—तो भी; **स्वाद**—स्वादिष्ट; **एइ त'**—इसी कारण; **जानिये**—मैं समझ सकता हूँ; **तोमाय**—आप पर; **कृष्णेर प्रसाद**—कृष्ण प्रसन्न हैं।

अनुवाद

"आप जब क्रोध में भी भोजन पकाते हो, तब भी वह अत्यन्त स्वादिष्ट होता है। इससे पता चलता है कि कृष्ण आप से कितने प्रसन्न हैं।

आपने खाइबे कृष्ण, ताहार लागिया ।
तोमार हस्ते पाक कराय उत्तम करिया ॥ १३२॥

आपने खाइबे कृष्ण, ताहार लागिया ।
तोमार हस्ते पाक कराय उत्तम करिया ॥ १३२॥

आपने—स्वयं; **खाइबे**—भोजन करेंगे; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **ताहार लागिया**—इस कारण से; **तोमार हस्ते**—आपके हाथ से; **पाक कराय**—भोजन बनवाते; **उत्तम करिया**—अच्छा।

अनुवाद

"चूँकि कृष्ण स्वयं भोजन करेंगे, इसलिए वे आपसे इतना अच्छा भोजन बनवाते हैं।

ऐछे अमृत-अन्न कृष्णे कर समर्पण ।
तोमार भाग्येर सीमा के करे वर्णन?'' ॥ १३३॥

ऐछे अमृत-अन्न कृष्णे कर समर्पण ।
तोमार भाग्येर सीमा के करे वर्णन?" ॥ १३३॥

ऐछे—ऐसा; **अमृत-अन्न**—अमृततुल्य अन्न; **कृष्णे**—भगवान् कृष्ण को; **कर समर्पण**—आप समर्पण करते हो; **तोमार**—आपके; **भाग्येर**—भाग्य की; **सीमा**—सीमा; **के**—कौन; **करे वर्णन**—वर्णन करेगा।

अनुवाद

"आप ऐसा अमृततुल्य अन्न कृष्ण को अर्पित करते हो। भला आपके सौभाग्य की सीमा का कौन अनुमान लगा सकता है?"

পণ্ডিত কহে,—"যে খাইবে, সেই পাক-কর্তা ।
আমি-সব—কেবল-মাত্র সামগ্রী-আহর্তা" ॥ ১৩৪ ॥

পণ্ডিত কহে,—"যে খাইবে, সেই পাক-কর্তা ।
আমি-সব—কেবল-মাত্র সামগ্রী-আহর্তা" ॥ ১৩৪ ॥

पण्डित कहे—पण्डित ने कहा; **ये खाइबे**—जो खाने वाला है; **सेइ**—उसी ने; **पाक-कर्ता**—पकाया है; **आमि-सब**—जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है; **केवल-मात्र**—केवल; **सामग्री**—सामग्री को; **आहर्ता**—जुटाना है।

अनुवाद

जगदानन्द पण्डित ने उत्तर दिया, "जो खाने वाला है, उसी ने इसे पकाया है। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं तो केवल सामग्री जुटाता हूँ।"

পুনঃ পুনঃ পণ্ডিত নানা ব্যঞ্জন পরিবেশে ।
ভয়ে কিছু না বলেন প্রভু, খায়েন হরিষে ॥ ১৩৫ ॥

পুনঃ পুনঃ পণ্ডিত নানা ব্যঞ্জন পরিবেশে ।
ভয়ে কিছু না বলেন প্রভু, খায়েন হরিষে ॥ ১৩৫ ॥

पुनः पुनः—पुनः पुनः; **पण्डित**—जगदानन्द पण्डित; **नाना व्यञ्जन**—तरह तरह की सब्जियाँ; **परिवेशे**—परोसते गये; **भये**—डर के मारे; **किछु**—कुछ भी; **ना बलेन**—नहीं बोले; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **खायेन**—खाते रहे; **हरिषे**—प्रसन्नतापूर्वक।

अनुवाद

जगदानन्द पण्डित महाप्रभु को तरह तरह की सब्जियाँ परोसते गये। महाप्रभु ने डर के मारे कुछ नहीं कहा, अपितु वे प्रसन्नतापूर्वक खाते रहे।

আগ্রহ করিয়া পণ্ডিত করাইলা ভোজন ।
আর দিন হৈতে ভোজন হৈল দশ-গুণ ॥ ১৩৬ ॥

आग्रह करिया पण्डित कराइला भोजन ।
आर दिन हैते भोजन हैल दश-गुण ॥ १३६ ॥

आग्रह करिया—आग्रह करके; **पण्डित**—जगदानन्द पण्डित; **कराइला भोजन**—खिला दिया; **आर दिन**—अन्य दिनों; **हैते**—तब; **भोजन**—भोजन; **हैल**—किया था; **दश-गुण**—दसगुना।

अनुवाद

जगदानन्द पण्डित ने आग्रह करके महाप्रभु को इतना खिला दिया कि अन्य दिनों की अपेक्षा उन्होंने दसगुना अधिक भोजन किया।

বার-বার প্রভু উঠিতে করেন মন ।
সেই-কালে পণ্ডিত পরিবেশে ব্যঞ্জন ॥ ১৩৭ ॥

बार-बार प्रभु उठिते करेन मन ।
सेइ-काले पण्डित परिवेशे व्यञ्जन ॥ १३७ ॥

बार-बार—बारम्बार; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **उठिते**—उठने का; **करेन मन**—मन करते; **सेइ-काले**—उसी समय; **पण्डित**—जगदानन्द पण्डित; **परिवेशे**—देते थे; **व्यञ्जन**—सब्जियाँ।

अनुवाद

महाप्रभु बारम्बार उठने का मन करते, किन्तु जगदानन्द पण्डित उन्हें और सब्जियाँ खिलाते जाते।

কিছু বলিতে নারেন প্রভু, খায়েন তরাসে ।
না খাইলে জগদানন্দ করিবে উপবাসে ॥ ১৩৮ ॥

किछु बलिते नारेन प्रभु, खायेन तरासे ।
ना खाइले जगदानन्द करिबे उपवासे ॥ १३८ ॥

किछु—कुछ भी; **बलिते नारेन**—बोलते नहीं; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **खायेन**—खाते गये; **तरासे**—डर के मारे; **ना खाइले**—यदि वे नहीं खायेंगे; **जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित; **करिबे उपवासे**—उपवास करेंगे।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु उनको अधिक खिलाने से मना नहीं कर पाये। वे

खाते गये और डरते रहे कि यदि वे खाना बन्द कर देंगे, तो जगदानन्द उपवास करेंगे।

তবে প্রভু কহেন করি' বিনয়-সম্মান ।
'দশ-গুণ খাওয়াইলা এবে কর সমাধান' ॥ ১৩৯॥

তবে প্রভু কহেন করি' বিনয়-সম্মান ।
'দশ-গুণ খাওয়াইলা এবে কর সমাধান' ॥ ১৩৯॥

তবে—उस समय; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **কহেন**—कहा; **করি'**—किया; **বিনয়-সম্মান**—आदरपूर्वक निवेदन; **দশ-গুণ**—दस गुना ज्यादा; **খাওয়াইলা**—आपने भोजन करा दिया; **এবে**—अब; **কর সমাধান**—तो बन्द करो।

अनुवाद

अन्त में महाप्रभु ने आदरपूर्वक निवेदन किया, "हे जगदानन्द, मैं जितना खाने का अभ्यस्त हूँ, उससे दस गुना अधिक भोजन आपने करा दिया। अब तो बन्द करो।"

তবে মহাপ্রভু উঠি' কৈলা আচমন ।
পণ্ডিত আনিল, মুখবাস, মাল্য, চন্দন ॥ ১৪০॥

তবে মহাপ্রভু উঠি' কৈলা আচমন ।
পণ্ডিত আনিল, মুখবাস, মাল্য, চন্দন ॥ ১৪০॥

তবে—तब; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **উঠি'**—उठे; **কৈলা আচমন**—अपने हाथ-मुँह धोये; **পণ্ডিত**—जगदानन्द पण्डित; **আনিল**—ले आये; **মুখ-বাস**—मुखवास; **মাল্য**—माला; **চন্দন**—चन्दन लेप।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु उठ खड़े हुए और उन्होंने अपने हाथ-मुँह धोये। तभी जगदानन्द पण्डित मसाले (मुख शुद्धि), माला तथा चन्दन लेप ले आये।

চন্দনাদি লঞা প্রভু বসিলা সেই স্থানে ।
'আমার আগে আজি তুমি করহ ভোজনে' ॥ ১৪১॥

चन्दनादि लञा प्रभु वसिला सेइ स्थाने ।
'आमार आगे आजि तुमि करह भोजने' ॥ १४१ ॥

चन्दन-आदि लञा—चन्दन लेप और माला स्वीकार करके; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **वसिला**—बैठ गये; **सेइ स्थाने**—उसी जगह; **आमार आगे**—मेरे सामने; **आजि**—अब; **तुमि**—आप; **करह**—करो; **भोजने**—भोजन।

अनुवाद

चन्दन लेप तथा माला स्वीकार करने के बाद महाप्रभु बैठ गये और बोले, "अब आप मेरे सामने भोजन करो।"

পণ্ডিত কহে,—"প্রভু যাই' করুন বিশ্রাম ।
মুই, এবে ল-ইব প্রসাদ করি' সমাধান ॥১৪২॥

पण्डित कहे,—"प्रभु ग्राइ' करुन विश्राम ।
मुइ, एबे ल-इब प्रसाद करि' समाधान ॥ १४२ ॥

पण्डित कहे—जगदानन्द पण्डित ने कहा; **प्रभु**—मेरे प्रभु; **ग्राइ'**—जाकर; **करुन विश्राम**—विश्राम कीजिये; **मुइ**—मैं; **एबे**—अब; **ल-इब प्रसाद**—प्रसाद ग्रहण करूँगा; **करि' समाधान**—प्रबन्ध करके।

अनुवाद

जगदानन्द ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, आप जाकर आराम करें। मैं कुछ प्रबन्ध कर लूँ, तब प्रसाद ग्रहण करूँगा।

রসুইর কার্য কৈরাছে রামাই, রঘুনাথ ।
ইঁহা সবায় দিতে চাহি কিছু ব্যঞ্জন-ভাত" ॥১৪৩॥

रसुइर कार्य्र कैराछे रामाइ, रघुनाथ ।
इँहा सबाय दिते चाहि किछु व्यञ्जन-भात" ॥ १४३ ॥

रसुइर—रसोई का; **कार्य्र**—कार्य; **कैराछे**—किया है; **रामाइ**—रामाइ; **रघुनाथ**—रघुनाथ भट्ट; **इँहा**—उन्हें; **सबाय**—सब; **दिते चाहि**—देना चाहता हूँ; **किछु**—कुछ; **व्यञ्जन-भात**—चावल और सब्जियाँ।

अनुवाद

"रामाइ पण्डित तथा रघुनाथ भट्ट ने रसोई का कार्य किया है। मैं उन्हें कुछ अन्न तथा सब्जियाँ देना चाहता हूँ।"

प्रभु कहेन,—"गोविन्द, तुमि इहाञि रहिबा ।
पण्डित भोजन कैले, आमारे कहिबा" ॥ १४४ ॥

प्रभु कहेन—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **गोविन्द**—गोविन्द; **तुमि**—तुम; **इहाञि रहिबा**—तुम यहीं रहो; **पण्डित**—जगदानन्द पण्डित; **भोजन कैले**—भोजन कर चुके; **आमारे कहिबा**—आकर मुझे बताना।

अनुवाद

तब महाप्रभु ने गोविन्द से कहा, "तुम यहीं रहो। जब पण्डित भोजन कर चुके, तो आकर मुझे बताना।"

एत कहि' महाप्रभु करिला गमन ।
गोविन्देरे पण्डित किछु कहेन वचन ॥ १४५ ॥

एत कहि' महाप्रभु करिला गमन ।
गोविन्देरे पण्डित किछु कहेन वचन ॥ १४५ ॥

एत कहि'—यह कहकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करिला गमन**—चले गये; **गोविन्देरे**—गोविन्द से; **पण्डित**—जगदानन्द पण्डित; **किछु**—कुछ; **कहेन**—कहे; **वचन**—शब्द।

अनुवाद

जब महाप्रभु यह कहकर चले गये, तो जगदानन्द पण्डित गोविन्द से बोले।

"तुमि शीघ्र याह करिते पाद-सम्वाहने ।
कहिह,—'पण्डित एबे वसिल भोजने' ॥ १४६ ॥

"तुमि शीघ्र याह करिते पाद-सम्वाहने ।
कहिह,—'पण्डित एबे वसिल भोजने' ॥ १४६ ॥

तुमि—तुम; **शीघ्र**—तुरन्त; **याह**—जाओ; **करिते**—करो; **पाद-सम्वाहने**—पैर दबाओ; **कहिह**—कहकर; **पण्डित**—जगदानन्द पण्डित; **एबे**—अभी अभी; **वसिल भोजने**—अपना भोजन करने बैठे।

अनुवाद

"तुरन्त जाओ और महाप्रभु के पैर दबाओ। तुम उनसे कह सकते हो, 'पण्डित अभी-अभी अपना भोजन करने बैठा है।'

তোমারে প্রভুর 'শেষ' রাখিমু ধরিয়া ।
প্রভু নিদ্রা গেলে, তুমি খাইহ আসিয়া'' ॥১৪৭॥

তোমারে প্রভুর 'শেষ' রাখিমু ধরিয়া ।
প্রভু নিদ্রা গেলে, তুমি খাইহ আসিয়া" ॥ ১৪৭॥

তোমারে—तुम्हारे लिए; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **শেষ**—बचा हुआ (शेष); **রাখিমু**—मैं रख दूँगा; **ধরিয়া**—ले लेना; **প্রভু নিদ্রা গেলে**—जब श्री चैतन्य महाप्रभु सो जाँय; **তুমি**—तुम; **খাইহ আসিয়া**—आकर भोजन खा लेना।

अनुवाद

"मैं तुम्हारे लिए महाप्रभु के भोजन का कुछ शेष रख दूँगा। जब वे सो जाँय, तो आकर अपना भोजन ले लेना।"

রামাই, নন্দাই আর গোবিন্দ, রঘুনাথ ।
সবারে বাঁটিয়া দিলা প্রভুর ব্যঞ্জন-ভাত ॥১৪৮॥

রামাই, নন্দাই আর গোবিন্দ, রঘুনাথ ।
সবারে বাঁটিয়া দিলা প্রভুর ব্যঞ্জন-ভাত ॥ ১৪৮॥

রামাই—रामाइ पण्डित; **নন্দাই**—नन्दाइ; **আর**—और; **গোবিন্দ**—गोविन्द; **রঘুনাথ**—रघुनाथ भट्ट; **সবারে**—उन सबके लिए; **বাঁটিয়া দিলা**—वितरित कर दिया; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **ব্যঞ্জন-ভাত**—सब्जियाँ और चावल।

अनुवाद

इस तरह जगदानन्द पण्डित ने महाप्रभु के शेष प्रसाद को रामाइ, नन्दाइ, गोविन्द तथा रघुनाथ भट्ट में वितरित कर दिया।

আপনে প্রভুর 'শেষ' করিলা ভোজন ।
তবে গোবিন্দেরে প্রভু পাঠাইলা পুনঃ ॥১৪৯॥

आपने प्रभुर 'शेष' करिला भोजन ।
तबे गोविन्देरे प्रभु पाठाइला पुनः ॥ १४९ ॥

आपने—स्वयं; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **शेष**—छोड़े गये भोजन; **करिला भोजन**—खाया; **तबे**—तब; **गोविन्देरे**—गोविन्द; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **पाठाइला**—भेजा; **पुनः**—फिर से।

अनुवाद

उन्होंने स्वयं भी श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा छोड़े गये भोजन का शेष खाया। तब महाप्रभु ने फिर गोविन्द को भेजा।

"देख,—जगदानन्द प्रसाद पाय कि ना पाय ।
शीघ्र आसि' समाचार कहिबे आमाय" ॥ १५० ॥

"देख,—जगदानन्द प्रसाद पाय कि ना पाय ।
शीघ्र आसि' समाचार कहिबे आमाय" ॥ १५० ॥

देख—देखो; **जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित; **प्रसाद**—प्रसाद; **पाय**—मिला; **कि**—कि; **ना**—नहीं; **पाय**—मिला; **शीघ्र आसि'**—तुरन्त लौटकर; **समाचार**—समाचार; **कहिबे**—बताओ; **आमाय**—मुझे।

अनुवाद

महाप्रभु ने उससे कहा, "जाओ और देखो कि जगदानन्द पण्डित खा रहे हैं कि नहीं। फिर तुरन्त लौटकर मुझे बताओ।"

गोविन्द आसि' देखि' कहिल पण्डितेर भोजन ।
तबे महाप्रभु स्वस्थे करिल शयन ॥ १५१ ॥

गोविन्द आसि' देखि' कहिल पण्डितेर भोजन ।
तबे महाप्रभु स्वस्त्ये करिल शयन ॥ १५१ ॥

गोविन्द—गोविन्द; **आसि'**—आकर; **देखि'**—देखकर; **कहिल**—सूचित किया; **पण्डितेर भोजन**—जगदानन्द पण्डित खा रहे हैं; **तबे**—तब; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **स्वस्त्ये**—शान्त हुए; **करिल शयन**—सो गये।

अनुवाद

यह देखकर कि जगदानन्द पण्डित सचमुच खा रहे हैं, गोविन्द ने महाप्रभु को सूचित किया। तब वे शान्त हुए और सो गये।

জগদানন্দে-প্রভুতে প্রেম চলে এই-মতে ।
সত্যভামা-কৃষ্ণে যৈছে শুনি ভাগবতে ॥ ১৫২ ॥

জগদানন্দে-প্রভুতে প্রেম চলে এই-মতে ।
সত্যভামা-কৃষ্ণে য়ৈছে শুনি ভাগবতে ॥ ১৫২ ॥

জগদানন্দে-প্রভুতে—जगदानन्द पण्डित और श्री चैतन्य माहप्रभु के बीच में; **প্রেম**—स्नेह; **চলে**—चलता रहा; **এই-মতে**—उसी तरह; **সত্যভামা-কৃষ্ণে**—सत्यभामा और कृष्ण के बीच; **য়ৈছে**—जैसे; **শুনি**—कथित है; **ভাগবতে**—श्रीमद्भागवत में।

अनुवाद

जगदानन्द पण्डित तथा श्री चैतन्य महाप्रभु के बीच ऐसा स्नेहयुक्त प्रेम-व्यवहार उसी तरह चलता रहा, जो कि 'श्रीमद्भागवत' में कथित सत्यभामा तथा कृष्ण के बीच के प्रेम व्यवहार के ही समान था।

জগদানন্দের সৌভাগ্যের কে কহিবে সীমা? ।
জগদানন্দের সৌভাগ্যের তেঁহ সে উপমা ॥ ১৫৩ ॥

জগদানন্দের সৌভাগ্যের কে কহিবে সীমা? ।
জগদানন্দের সৌভাগ্যের তেঁহ সে উপমা ॥ ১৫৩ ॥

জগদানন্দের—जगदानन्द पण्डित के; **সৌভাগ্যের**—भाग्य की; **কে**—कौन; **কহিবে**—कह सकता; **সীমা**—सीमा; **জগদানন্দের**—जगदानन्द पण्डित के; **সৌভাগ্যের**—भाग्य की; **তেঁহ**—वे; **সে**—के; **উপমা**—उदाहरण।

अनुवाद

भला जगदानन्द पण्डित के भाग्य की सीमा का अनुमान कौन लगा सकता है? वे स्वयं ही अपने महान् सौभाग्य के उदाहरण हैं।

জগদানন্দের 'প্রেম-বিবর্ত' শুনে যেই জন ।
প্রেমের 'স্বরূপ' জানে, পায় প্রেম-ধন ॥ ১৫৪ ॥

जगदानन्देर 'प्रेम-विवर्त' शुने ग्रेइ जन ।
प्रेमेर 'स्वरूप' जाने, पाय प्रेम-धन ॥ १५४॥

जगदानन्देर—जगदानन्द के; **प्रेम-विवर्त**—प्रेम व्यवहार; **शुने**—सुनते ही; **ग्रेइ जन**—कोई भी; **प्रेमेर**—प्रेम का; **स्वरूप**—स्वरूप; **जाने**—वह जानता है; **पाय**—प्राप्त करता है; **प्रेम-धन**—कृष्ण-प्रेम रूपी धन।

अनुवाद

जो कोई भी जगदानन्द पण्डित तथा श्री चैतन्य महाप्रभु के बीच के प्रेम-व्यवहार के विषय में सुनता है या जगदानन्द की पुस्तक 'प्रेमविवर्त' को पढ़ता है, वह समझ सकता है कि प्रेम क्या है। यही नहीं, उसे कृष्ण का प्रेमावेश प्राप्त होता है।

तात्पर्य

विवर्त शब्द का अर्थ है, जो जैसा दिखता है उसे उसका सर्वथा विपरीत मानना। यहाँ जगदानन्द पण्डित अत्यन्त क्रुद्ध प्रतीत हो रहे थे, किन्तु उनका यह क्रोध श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रति उनके अत्यधिक प्रेम की अभिव्यक्ति था। *प्रेम विवर्त* एक पुस्तक का भी नाम है, जिसे जगदानन्द पण्डित ने लिखा है। इसीलिए *श्रीचैतन्य-चरितामृत* के लेखक कृष्णदास कविराज गोस्वामी ने *प्रेमविवर्त* शब्द का प्रयोग उस व्यक्ति को सूचित करने के लिए किया है, जो इस पुस्तक को पढ़ता है या श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ जगदानन्द पण्डित के प्रेमपूर्ण व्यवहार के विषय में सुनता है। प्रत्येक दशा में, ऐसा व्यक्ति शीघ्र ही कृष्ण-प्रेम प्राप्त करता है।

শ্রী-রূপ-রঘুনাথ পদে যার আশ ।
চৈতন্য-চরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥১৫৫॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे ग्रार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ १५५॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—के चरणकमलों में; **ग्रार**—जिसकी; **आश**—आकांक्षा; **चैतन्य-चरितामृत**—*चैतन्य चरितामृत* नामक ग्रन्थ का; **कहे**—वर्णन करते हैं; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों की वन्दना करते हुए, तथा सदैव उनकी कृपा की कामना करते हुए उनके चरणचिह्नों पर चलकर, मैं कृष्णदास श्री चैतन्य चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत अन्त्यलीला के अन्तर्गत श्री चैतन्य महाप्रभु एवं जगदानन्द पण्डित का प्रेम व्यवहार नामक बारहवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ।